नव गति - नव लय
विभागीय आयोजन
सत्र् - २०१६-१७ से २०२०-२१ तक

महाविद्यालय विशिष्टता-

.हमारा महाविद्यालय ग्रामीण क्षेत्र में उच्च शिक्षा का प्रसार करने के लिए प्रतिबद्ध है। महाविद्यालय विद्यार्थियों के समग्र विकास की रूपरेखा पर कार्य कर रहा है। हमारा महाविद्यालय छत्तीसगढ़ राज्य के धमतरी जिले के अंतर्गत आता है। गांधी जी की द्वितीय छत्तीसगढ़ यात्रा (तत्कालीन सी पी बरार) 1933 ई.में हुआ था।उस यात्रा के मूल में धमतरी अंचल के कंडेल नहर सत्याग्रह को बल प्रदान करना था। भखारा के किसान उस आंदोलन से जुड़े थे।यह क्षेत्र राष्ट्रीय आंदोलन का सबाल्टर्न पाठ रचता है।किसानों के सक्रिय प्रतिरोध और अंग्रेजों के किसानों के आगे झुकने के कारण गांधी जी ने धमतरी को भारत का 'दूसरा बारदोली' कहा था। छत्तीसगढ़ को धान का कटोरा कहा जाता है। धमतरी क्षेत्र धान के उत्पादकता और बीजों की विविधता के कारण इसका प्रतिनिधि रूप का आभास देता है।यहाँ के विद्यार्थी पढ़ाई के साथ कृषि कर्म में जीवंत रूप से संलग्न हैं।

.महाविद्यालय का परिवेश ग्रामीण है।जिसमें अब कस्बाई अहसास आने लगा है। भखारा क्षेत्र अपने विरासत में लैंगिक चेतना से सम्पन्न है। इसलिए इस अंचल में पारिवारिक बिंदु पर स्त्री सामंतीय बेड़ियों से मुक्त है। भखारा क्षेत्र में महाविद्यालय शुरू होने से स्कूली शिक्षा तक रुक जाने वाली बालिकाएं महाविद्यालयीन शिक्षा पूरी कर रही है।पिछले पांच वर्षों में महाविद्यालय प्रवेश और रिजल्ट बालिकाओं के सक्रिय और उत्साही प्रतिनिधित्व का साक्षी है।बालकों की तुलना में संख्याबल और परिणाम बालिकाओं के पक्ष में है।

हमारा हिंदी विभाग इन सब विशिष्टताओं से युक्त महाविद्यालय में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के मूल प्रतिज्ञा-

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।

को आदर्श मानकर कार्यरत है।

संकलन/संपादन — डॉ. भुवाल सिंह ठाकुर

पुण्य स्मरण: महादेवी वर्मा, गजानन माधव मुक्तिबोध—11-09-2017

साहित्य हमें नई राह दिखाता है : वैष्णव

भखारा कॉलेज मनी कवि मुक्तिबोध की पुण्यतिथि

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

भखारा. शासकीय महाविद्यालय में छायावाद की प्रमुख स्तंभ महादेवी वर्मा तथा प्रगतिशील कवि मुक्तिबोध की पुण्यतिथि मनाई गई। इस अवसर पर विविध कार्यक्रम आयोजित किया गया।

हिंदी विभागाध्यक्ष कविता वैष्णव ने कहा कि साहित्य हमें नई राह दिखाता है। महादेवी जहां गुलाम भारतवर्ष में स्त्री मुक्ति और देशभक्ति की स्वर हैं, वहीं मुक्तिबोध आजाद भारत मे आए कथनी और करनी के अंतर को दिखाते हुए ज्ञानात्मक संवेदन और संवेदनात्मक ज्ञान के रचनाकार हैं। प्राचार्या डॉ चन्द्रकान्ता शर्मा ने कहा कि अपने जीवन मे पूर्णता प्राप्त करने के लिए साहित्य का अध्ययन जरूरी है। साहित्य एक ऐसा माध्यम है, जो जीवन को सहज, सरल और रचनात्मक आयामों से जोड़ता है। महादेवी और मुक्तिबोध के साहित्य मे जुड़ना भारत की संस्कृति और प्रतिरोध परम्परा से जुड़ना है। इस आयोजन की विशेष बात यह रही कि छात्र छात्राओं ने दोनों साहित्यकारों की चुनिंदा पंक्तियों को पोस्टर का रूप दिया और उनकी कविताओं का पाठ किया। एमए के छात्र धर्मेंद्र कुमार और लोकेश्वर राव की टीम ने मुक्तिबोध की अमर कविता अंधेरे में का और बीएसी की छात्रा कविता ने मुझे कदम कदम पर कविता का सस्वर पाठ किया। इस अवसर परर छात्रों ने मुक्तिबोध के जीवन पर आधारित रेडियो रूपक और महादेवी के जीवन को व्यक्त करता लघु फिल्म का प्रदर्शन भी किया। कार्यक्रम का संचालन हिन्दी के सहायक प्राध्यापक डॉ भुवाल सिंह ठाकुर ने किया। कार्यक्रम में प्रोफेसर प्रदीप, प्रोफेसर किशोर, अविनाश, यशवंत, दिनेश समेत छात्र-छात्राएं बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

हिन्दी दिवस–2017

हिंदी दिवस सप्ताह -14/09/2017 से 23/09/2017

1-एकल व्याख्यान- विज्ञान और हिंदी

डॉ.अविनाश निचट- 15/09/2017

2-आशु कविता लेखन प्रतियोगिता- 16/09/2017

3-डाक्यूमेंट्री फ़िल्म प्रदर्शन-रामधारी सिंह दिनकर- 18/09/2017

4-डाक्यूमेंट्री फ़िल्म प्रदर्शन-हरिवंशराय बच्चन-19/09/2017

5-डाक्यूमेंट्री फ़िल्म प्रदर्शन-सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'-20/09/2017

6-डाक्यूमेंट्री फ़िल्म प्रदर्शन-नागार्जुन-21/09/2017

7-डाक्यूमेंट्री फ़िल्म प्रदर्शन-प्रेमचन्द- 22/09/2017

8-पोस्टर प्रतियोगिता/कवितापाठ- 23/09/2017

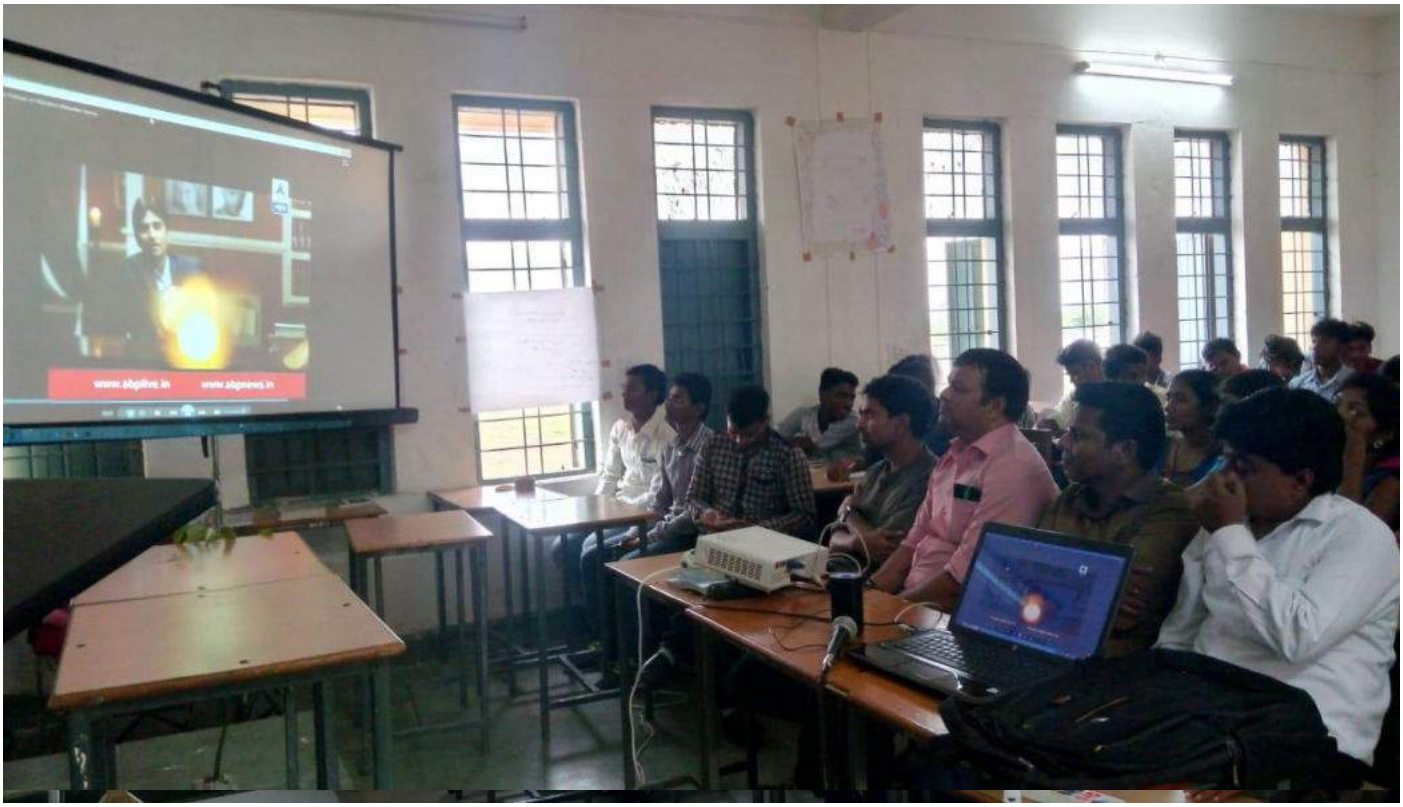

SAVE TREE
SAVE LIFE
विज्ञान और हिन्दी

"हिन्दी-सप्ताह"
आशु कविता लेखन
प्रतियोगिता

SAVE LIFE
रामधारी सिंह दिनकर

नमन अनुपम मिश्र- 19/12/2017

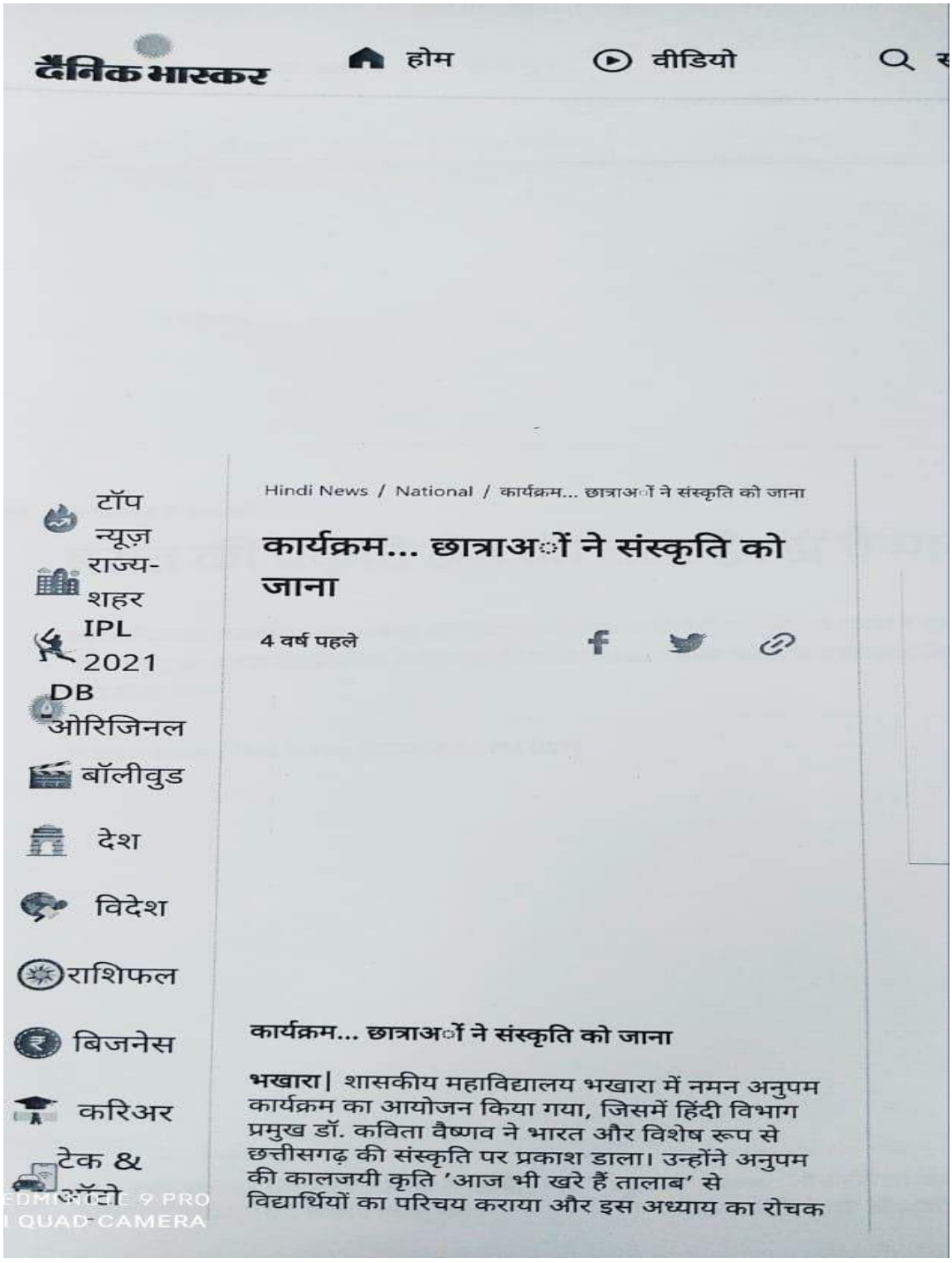

दैनिक भास्कर

होम

वीडियो

टॉप न्यूज़

राज्य-शहर

IPL 2021

DB ओरिजिनल

बॉलीवुड

देश

विदेश

राशिफल

बिजनेस

करिअर

टेक & ऑटो

Hindi News / National / कार्यक्रम... छात्राअों ने संस्कृति को जाना

कार्यक्रम... छात्राअों ने संस्कृति को जाना

4 वर्ष पहले

कार्यक्रम... छात्राअों ने संस्कृति को जाना

भखारा| शासकीय महाविद्यालय भखारा में नमन अनुपम कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें हिंदी विभाग प्रमुख डॉ. कविता वैष्णव ने भारत और विशेष रूप से छत्तीसगढ़ की संस्कृति पर प्रकाश डाला। उन्होंने अनुपम की कालजयी कृति 'आज भी खरे हैं तालाब' से विद्यार्थियों का परिचय कराया और इस अध्याय का रोचक

साहस

शासकीय महाविद्यालय भखारा (धमतरी)
नमन अनुपम मिश्रजी

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जयंती- 22/01/2018

कबीर जयंती- 01/07/2018

कबीर ने भक्तिकाल को नई रोशनी दी : डॉ.चंद्रकांता

शासकीय महाविद्यालय भखारा में हिंदी साहित्य के सुप्रसिद्ध कवि और समाज सुधारक कबीर की 620वीं जयंती मनाई गई। इस दौरान सभी ने कबीर के जीवन से जुड़े तथ्यों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में विभाग प्रमुख डॉ.कविता वैष्णव ने आयोजन के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि साहित्यकारों के व्यापक सरोकार से महाविद्यालयीन विद्यार्थियों को जोड़न

Publish Date: | Wed, 04 Jul 2018 03:43 AM (IST)

नईदुनिया

भखारा। नईदुनिया न्यूज

शासकीय महाविद्यालय भखारा में हिंदी साहित्य के सुप्रसिद्ध कवि और समाज सुधारक कबीर की 620वीं जयंती मनाई गई। इस दौरान सभी ने कबीर के जीवन से जुड़े तथ्यों पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम में विभाग प्रमुख डॉ.कविता वैष्णव ने आयोजन के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि साहित्यकारों के व्यापक सरोकार से महाविद्यालयीन विद्यार्थियों को जोड़ना है। अपने समय,समाज और देश के प्रति विवेक बोध जगाना है, जिससे विद्यार्थी के मन में मनुष्यता का स्थायी बोध जागे। संस्था प्रमुख प्राचार्य डॉ.चन्द्रकान्ता शर्मा ने कहा कि कबीर अपने आलोक धर्मा व्यक्तित्व से भक्तिकाल को नई रोशनी दी। इस रोशनी में एक तरफ रूढ़ियों, पाखंड, कथनी करनी के अंतर की भर्त्सना है। तो दूसरी ओर धर्म,जाति, सम्प्रदाय से रहित मनुष्य के आचरण की पवित्रता संबंधी जीवन मूल्य हैं। इस अवसर पर मुख्य वक्ता विंध्यवासिनी महाविद्यालय सनौद के प्राचार्य प्रीतराम साहू ने कबीर को प्रश्न का और तुलसी को उत्तर का कवि कहा। उन्होंने कबीर संबंधी शोध पर प्रकाश डालते हुए आचार्य शुक्ल,हजारी प्रसाद द्विवेदी, रवीन्द्रनाथ टैगोर, एजरा अंडरहिल, श्याम सुंदर दास, नामवर सिंह, पुरूषोत्तम अग्रवाल के कार्य पर संक्षिप्त प्रकाश डाला। कार्यक्रम में डॉ. भुवाल सिंह ठाकुर, डॉ. संजय शर्मा, डॉ. एलआर डोंगरे, आनंद सोनी, दिनेश नाग, डॉ. प्रदीप जांगड़े, डॉ. अविनाश निचत, यशवन्त वैष्णव, रामकिशोर यादव उपस्थित थे।

Ads by Jagran.TV

प्रेमचंद जयंती–01.08.2018

गुरू पर्व और प्रतिभा सम्मान :– 09.08.2018

भखारा कॉलेज में गुरु पर्व और प्रतिभा सम्मान उत्सव मना

हरिभूमि न्यूज ▶▶कुरूद

शासकीय महाविद्यालय भखारा के हिंदी साहित्य विभाग के विद्यार्थियों द्वारा गुरु पर्व एवं राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा उत्तीर्ण छात्रा कु. देवश्री एवं पायल का सम्मान किया गया। इस अवसर पर सर्वप्रथम हिंदी विभाग प्रमुख डॉ. कविता वैष्णव ने कहा कि गुरु जीवन का दिशाबोधक होता है। हमारा जीवन दर्शन गुरु के ज्ञान से निर्मित होता है। डॉ. वैष्णव ने गुरुपर्व के अवसर में अपने विद्यार्थी जीवन के गुरुओं को याद किया और कहा कि आज मैं जो भी हूँ,गुरुओं के आशीर्वाद के कारण हूँ। दोनों राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा उत्तीर्ण बेटियों को बधाई। इस कार्यक्रम में हिंदी विभाग के विद्यार्थियों में से देव श्री और पायल ने अपनी सफलता की कहानी बताई। केशरी, मधु, तुलसा, फुलेश्वरी, मोहिनी ने गुरु से सम्बंधित अपनी यादें साझा किया। कार्यक्रम में अगला वक्तव्य डॉ. भुवाल सिंह ने दिया। उन्होंने कहा कि गुरु के प्रति प्रीति और प्रतीति जरूरी है। उन्होंने चाणक्य को याद करते हुए उनके कथन को अवतरित किया-/"राष्ट्र का

उत्थान और पतन शिक्षक के हाथों में झूलता है। कार्यक्रम का सफल संयोजन लोकेश्वर साहू एवं लोकेश्वर राव ने किया।

Pride of I

विजय शांडिल्य

OSAKA

JOHNSON MARBLE&QUARTZ

Kajaria

VARMORA

टाईल्स
मार्बल
ग्रेनाइट
काला पत्थर
खपरा टाईल्स
सेनेटरी
नल सामान

विजय टाईल्स एण्ड सेनेटरी

स्टेट बैंक के बाजू, रतनबांधा रोड, धमतरी मो.9826635477, 8602035477

भारतेंदु जयंती का आयोजन :– 09.09.2018

कॉलेज में भारतेंदु जयंती का आयोजन

कुरूद. गत दिनों शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय भखारा में भारतेंदु हरिश्चन्द्र जयंती के अवसर पर उनका पुण्य स्मरण किया गया. इस अवसर पर सर्वप्रथम हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. कविता वैष्णव ने भारतेन्दु के जीवनवृत्त एवं रचनाकर्म पर प्रकाश डाला. साथ ही उन्होंने कहा कि भारतेंदु की रचनाएं आधुनिक भावबोध की रचनाएं है जिसमें भारतीय जनता की आशा -आकांक्षा झलकती है. भारतेंदु आधुनिक हिंदी साहित्य के निर्माता और भारतीय समाज में सामंतीय रूढ़ियों और विदेशी साम्राज्यवाद के विरूद्ध प्रतिरोध के प्रतीक थे. भारतेंदु हरिश्चन्द्र के साहित्य के पाठ से गुजरना हिंदी की उस विकशनशील परम्परा की जीवन्त यात्रा से गुजरना है जिसके पड़ाव में स्त्री, किसान, बेबस हिंदी समाज की जनता और इन सबसे अलहदा एक ऐसा भारतेंदु का वैश्विक विजन मिलेगा जिसमें भारत के समाज संशोधन और देशवत्सलता की ज्योति पुंज जगमगा रही है. इस अवसर पर हिंदी के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. भुवाल सिंह ठाकुर ने भारतेंदु के हंसमुख गद्य और उनकी देशभक्ति के विभिन्न आयामों पर विस्तार से प्रकाश डाला. बाबू ब्रजरत्नदास, डॉ. रामविलास शर्मा, वसुधा डालमिया, नामवर सिंह, मैनेजर पांडेय, सुधीरचन्द्र, खीरभारत तलवार जैसे विद्वानों को उद्धृत करते हुए डॉ. ठाकुर ने कहा कि भारतेंदु नाटक जैसे सर्वाधिक लोकतांत्रिक विधा को चुनकर एक ओर हिंदी नवजागरण को जनसामान्य तक पहुंचाया तो दूसरी ओर अपने समानधर्मा साहित्यकारों को एकजुट कर देश में साहित्य को जनसमूह के हृदय का विकास का पर्याय भी बना दिया. आज जब लोग लोकजीवन, लोकभाषा और अपनी देशी पहचान से च्युत हो रहे हैं तब भारतेंदु काल का साहित्य हमें स्वत्वबोध से सम्पन्न होने की मशाल दिखा रहा है. इस अवसर पर महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की उत्साही उपस्थिति अपने साहित्यकार के प्रति निष्ठा का निदर्शन कराया.

कॉलेज में लोगों को मताधिकार के लिए किया गया प्रेरित

मगरलोड. शासकीय महाविद्यालय मगरलोड में कार्ययोजना के तहत विद्यार्थी द्वारा भय एवं लालच से मुक्त होकर मताधिकार का प्रयोग करने एवं अन्य लोगों को मतदान हेतु प्रेरित करने के संबंध में शपथ दिलाया गया. उक्त कार्यक्रम महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य डां. घनश्याम देवांगन के निर्देशन में किया जा रहा है. कार्यक्रम में स्वीप प्रभारी योगराज साहू, कौसलेश कुमार ध्रुव, ओंकार प्रसाद साहू, एवं महाविद्यालयीन विद्यार्थी उपस्थित रहे.

हिंदी दिवस -14/09/2018

हिन्दी भाषा है एक जीवन प्रणाली

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

बोरझरा. शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय भखारा में हिन्दी दिवस मनाया गया। प्राचार्या डॉ चन्द्रकान्ता शर्मा ने कहा कि मातृभाषा और मातृभूमि का मान ही देशभक्त होने की निशानी है। इसलिए छात्र-छात्राओं को हिन्दी से दूर नहीं भागना चाहिए। अपने जीवन व्यवहार में इसे शामिल करें। हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ कविता वैष्णव ने हिंदी भाषा के इतिहास, साहित्य, सामासिक बोध एवं वैश्विक आयामों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि हिंदी भाषा हमारी पहचान है। इसका दिवस एक दिन नहीं बल्कि यह जीवन की प्रत्येक दिवस की हमारी अस्मिता का परिचायक है। अभिषेक सोनवानी ने अपनी स्वरचित कविता का पाठ किया। भीषम सिन्हा ने माखनलाल चतुर्वेदी और जयशंकर प्रसाद की कविता का पाठ किया। डॉ भुवाल सिंह ठाकुर ने कहा कि हिंदी मात्र एक भाषा नहीं, बल्कि एक जीवन प्रणाली है। डॉ ठाकुर ने प्रवासी हिंदी लेखन, पुरषोत्तमदास टण्डन, महात्मा गांधी और पंडित गौरीदत्त के जय नागरी आंदोलन के साथ फादर कामिल बुल्के को याद किया। इस मौके पर प्राध्यापक डॉ संजय शर्मा, रामकिशोर यादव, आनंद सोनी आदि उपस्थित थे।

बोरझरा. हिन्दी दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित प्राध्यापक।

निराला जयंती और बसन्तोत्सव का आयोजन – 18-02-2019

गत दिनों शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय भखारा में सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जयंती एवं बसन्तोत्सव का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम मां वीणावादिनी वंदना "वर दे वीणावादिनि वर दे"के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई! विद्यार्थियों की ओर से सर्वप्रथम कुमारी केशरी ने निराला के मुक्त छंद और जीवनवृत्त पर प्रकाश बात की।कु.तुलसा ने निराला के 'सखी बसन्त आया' गीत का गायन की। लोकेश्वर राव ने निराला के सरोज स्मृति की सामाजिक सत्य को उद्घाटित किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गोवा विश्वविद्यालय के भूगोल के विभागाध्यक्ष डॉ. प्रवीर रथ थे। उन्होंने अपने उद्धबोधन में गोवा में मनाई जाने वाली शारदा जयंती का उल्लेख किया और सभी महाविद्यालयीन विद्यार्थियों को शैक्षणिक भ्रमण में गोवा आने का स्नेहिल निमंत्रण दिया।उन्होंने छत्तीसगढ़ और उड़ीसा के सांस्कृतिक सम्बन्धों पर भी प्रकाश डाला।कार्यक्रम कीअध्यक्षता करते हुए डॉ. संजय शर्मा ने सरस्वती मां के ज्ञान से लक्ष्मी को प्रसन्न कर यश प्राप्ति की बात कही।हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ.कविता वैष्णव ने निराला को दुर्धर्ष संघर्ष और जीवटता का कवि कहा।उन्होंने अपने प्रेरक उद्धबोधन में निराला के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति को हर परिस्थिति में जूझने और मानवता को नवराह दिखाने की सन्देश को उभारा।डॉ. वैष्णव ने निराला के जीवन और साहित्य सम्बंधी अनछुए पहलुओं पर भी प्रकाश डाली।कार्यक्रम के मुख्य आशय को स्पष्ट करते हुए हिंदी के सहायक प्राध्यापक डॉ. भुवाल सिंह ठाकुर ने सरस्वती मां की प्रतिमा और चित्र का इतिहास विद्यार्थियों को समझाया।उन्होंने भोज राजा परमार की भोज शाला की सरस्वती प्रतिमा और राजा रवि वर्मा की पेंटिंग को सरस्वती की छवि का आदि आधार बताया।साथ ही डॉ. ठाकुर ने निराला की वंदना 'प्रिय स्वतन्त्र रव ' की व्याख्या भारतीय स्वाधीनता आंदोलन से जोड़कर की और बताया कि निराला सामंतीय रूढ़ियों और विदेशी गुलामी से मुक्त स्वाधीन चेतना के कवि थे।निराला साहित्य से सम्बन्ध में उन्होंने पंत,प्रसाद ,महादेवी,डॉ. रामविलास शर्मा,दूधनाथ सिंह और निर्मला जैन को उद्धृत किया।प्रोफेसर आनन्द सोनी ने साहित्य और जीवन के रिश्ते पर अंग्रेजी साहित्यकारों के आलोक में निराला के जीवन सन्दर्भो पर बात की।डॉ. एल.आर.डोंगरे और प्रोफेसर रामकिशोर यादव ने भी विद्यार्थियों को सम्बोधित किया।कार्यक्रम के संयोजन और संचालन का कुशल दायित्व एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टेर के छात्र लोकेश्वर कुमार ने निभाया।कार्यक्रम में विद्यार्थियों की उत्साही उपस्थिति रही।

नमन नामवर – 26/02/2019

साहत 13 जोड़ शामिल हुये. इस

हिंदी आलोचना के प्रतिमान थे नमन नामवर-भुवाल

भखारा. शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय भखारा में प्रख्यात आलोचक प्रोफेसर नामवर सिंह की स्मृति में नमन नामवर का आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम में हिंदी के असिस्टेंटेंट प्रोफेसर डॉ. भुवाल सिंह ने नामवर सिंह के विविध जीवन प्रसंगों को उकेरा. उन्होंने कहा कि नामवर हिंदी आलोचना के प्रतिमान थे. साथ ही वे वैश्विक इतिहास, सामाजिक - सांस्कृतिक विमर्शों के भी अद्वितीय जानकार थे. नामवर का होना हिंदी के उस परम्परा के साथ होना है जिसमें हजारी प्रसाद द्विवेदी की परम्परा बोध और लोकजीवन का पयर्वेक्षण है. आचार्य शुक्ल का विवेक बोध है और समकालीन विमर्शों के दिशाबोधक जीवन्त व्यक्तित्व है. नामवर सिंह एक चलते फिरते विश्वविद्यालय थे. वे एकमात्र ऐसे विरल आलोचक थे जिन्हें संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश की परम्परा के ज्ञान के साथ यूरोपीय ज्ञान विज्ञान के प्रामाणिक ज्ञान से सम्पन्न थे. नामवर सिंह हिंदी के वाचिक परम्परा के माध्यम से भारतीय समाज में जागृति के पुरोधा पुरुष थे. पृथ्वीराज रासो की भाषा, छायावाद, कहानी नई कहानी, कविता के नए प्रतिमान जैसे विविध पुस्तकों के माध्यम से उन्होंने हिंदी भाषा साहित्य को नई दिशा दी. कार्यक्रम में हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. कविता वैष्णव के अतिरिक्त हिंदी साहित्य के स्नातक और स्नातकोत्तर विषय के सुधि विद्यार्थी भी मौजूद थे.

शैक्षणिक भ्रमण- 28/02/2019

भखारा कॉलेज के छात्रों ने किया शैक्षणिक भ्रमण

धमतरी. शासकीय महाविद्यालय भखारा के हिंदी विभाग विभाग के विद्यार्थियों ने प्रकृति यात्रा नाम से शैक्षणिक भ्रमण किया. इस भ्रमण के अंतर्गत विद्यार्थियों ने राज्य के सांस्कृतिक-धार्मिक स्थलों की यात्रा की. इस यात्रा के सहसंयोजक डॉ. भुवाल सिंह ठाकुर ने कहा कि यह प्रकृति यात्रा हिंदी विभाग के पाठ्यक्रम को व्यावहारिक रचनात्मक प्रयत्न से जोड़ने के उपक्रम के तहत किया गया. विद्यार्थी खल्लारी, जतमई, घटारानी, गरियाबंद की यात्रा के दौरान अपनी असाइनमेंट के विषय चयनित किये. विद्यार्थियों को यात्रा संस्मरण, प्रकृति प्रेम, वनस्पति इतिहास, छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति आदि विषयों पर लघु निबंध तैयार करने कहा गया. जिसे वे हस्तलिखित यात्रा पत्रिका पुनर्नवा शीर्षक से निकालेंगे. ऐसी यात्राएं विद्यार्थियों के अंदर अपने परिवेश से प्रेम कराना सिखाता है. प्रकृति से जुड़ना अपने देश से जुड़ना है क्योंकि प्रकृति प्रेम ही देशप्रेम है. साल, सागौन, महुआ, पहाड़, नदियों को जानना वास्तविक भारत को जानना है. हिंदी विभाग प्रमुख और इस यात्रा के संयोजक डॉ. कविता वैष्णव ने कहा कि यात्राएं विद्यार्थियों के अंदर सामूहिकता, संस्कार और स्वयं की अभिव्यक्ति को निखारने का बेहतर माध्यम होता है. हिंदी भाषा साहित्य का सबसे रोचक खण्ड यात्रा वृतांत यात्राओं की ही देन है. ऐसी यात्राएं विद्यार्थी मन में जिज्ञासा और भाषायी विविधता का बोध जगाता है. जिससे वह बेहतर नागरिक बनता है. इस यात्रा के दौरान तुलसा ने निमर्ला पुतुल की कविता आओ मिलकर बचाये का पाठ किया. लोकेश्वर राव ने अज्ञेय की कविता हरी घास पर क्षण भर सुनाया. केसरी ने मुक्तिबोध की कविता अंधेरे में का पाठ किया. देव श्री ने लक्ष्मण मस्तुरिया के गीत मोर संग चलव रे का गायन किया.

प्रकृति से जुड़ाव

छात्रों ने घटारानी का किया शैक्षणिक भ्रमण

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

भखारा. शासकीय महाविद्यालय भखारा के हिंदी विभाग विभाग के छात्रों ने खल्लारी, जतमई, घटारानी का शैक्षणिक भ्रमण किया। छात्रों ने कहा कि प्रकृति प्रेम ही देशप्रेम है। प्रकृति को नजदीक से देखने को मौका मिला। डॉ कविता वैष्णव ने कहा कि शैक्षणिक भ्रमण हर साल कराना चाहिए। यह छात्रों के अंदर स्वयं की अभिव्यक्ति को निखारने का बेहतर माध्यम है। छात्रों को यात्रा संस्मरण लिखने के लिए कहा गया है, जिसे पत्रिका में प्रकाशित किया जाएगा।

पुण्य स्मरण–महादेवी वर्मा,गजानन माधव 'मुक्तिबोध' 11.09.2019

भखारा कॉलेज में मुक्तिबोध और महादेवी का पुण्य-स्मरण

महर्षि वेदव्यास शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय भखारा में हिंदी विभाग के संयोजन में पुण्यस्मरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।आयोजन के शुरुआत में हिंदी विभाग प्रमुख डॉ कविता वैष्णव ने सविस्तार . महादेवी और मुक्तिबोध के जीवन और रचनायात्रा से विद्यार्थियों का परिचय कराया।उन्होंने महादेवी के 'आधुनिक मीरा' के रूप को विभिन्न आयामों के माध्यम से स्पष्ट किया।डॉ वैष्णव ने महादेवी के छायावादी . कवयित्री रूप के साथ उनके तेजस्वी गद्यकार रूप को सशक्त भाषा में उद्घाटित किया।उन्होंने कहा कि महादेवी की कविताओं की अपेक्षा उनकेगद्य अधिक सहज और तेजोदीप्त है।'शृंखला की कड़ियाँ' जैसी रचनाएं नारी सशक्तिकरण का जीवंत दास्तान है।हर भारतीय को इसे पढ़ना चाहिए।महादेवी ने शिक्षा को मुक्ति का मूल अस्त्र माना था।ज्ञान को समस्या के समाधान की कुंजी कहा था।देश दुनिया को महादेवी साहित्य का पाठ नया रास्ता दिखाने में सक्षम है।कार्यक्रम के दूसरे वक्ता डॉ भुवाल सिंह ठाकुर ने प्रगतिशील कवि . गजानन माधव मुक्तिबोध के विभिन्न जीवन प्रसंगों को उठाया।मुक्तिबोध के कालजयी कविता'अंधेरे में'की सामयिक व्याख्या करते हूए डॉठाकुर ने बताया कि जब तक मध्ववर्ग अपनी कथ .नी और करनी के भेद को नहीं मिटाएगा भारत की मुक्ति अधूरी रहेगी।भारत में व्याप्त शोषण के विभिन्न रूपों का जब तक विस्तार होता रहेगा तब तक मुक्तिबोध प्रासंगिक रहेंगे।आज पुनः हमारे साहित्यिकारों को सत चित आनन्द को छोड़कर सत चित वेदना के सूत्र को अपनाना होगा तभी सच्चा और खरा साहित्य सामने आएगा।उन्होंने अपने उद्बोधन में मुक्तिबोध के 'नया खून' के पत्रकार रूप और राजनांदगाँव दिग्विजय कॉलेज के साथ उनके रिश्ते के विभिन्न प्रसंगों को सुनाया।

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में हिंदी विभाग के विद्यार्थी गण उपस्थित थे।

हिंदी दिवस- 14/09/2019

शासकीय महाविद्यालय भखारा में हिंदी दिवस का आयोजन

शासकीय महाविद्यालय भखारा में हिंदी सप्ताह के अंतर्गत अंतिम दिन हिंदी दिवस का आयोजन किया गया।हिंदी सप्ताह के अंतर्गत महाविद्यालय में हिंदी भाषण,कविता पाठ,फ़िल्म समीक्षा,साहित्यिक फ़िल्म प्रदर्शन आदि विभिन्न आयोजन किये गए।कार्यक्रम की शुरुआत निराला रचित वंदना 'वर दे वीणावादिनी ' कविता के समवेत गायन से हुई।सर्वप्रथम प्राचार्या डॉ चंद्रकांता शर्मा ने कहा कि हिंदी दिवस का . कराती है।उन्होंने भारतेंदु को याद करते हुए उनकी प्रसिद्ध पंक्ति निज" भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल,बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को शूल हिंदी दिवस के अवसर पर विद्यार्थियों!को दोहराया" ! में से चुमेश्वरी,चाँदनी साहू, ,महेश्वर ,लीनीमा , तुलसा ,केसरी,दुगेश्वरी ने सम्बोधित किया।,कार्यक्रम के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए डॉ . भुवाल सिंह ठाकुर ने हिंदी भाषा साहित्य की विशाल परम्परा को याद किया।चंदबरदाई,अमीर खुसरो,कबीर,सूर,तुलसी, जायसी,मीरा,घनानन्द, भारतेंदु,महावीरप्रसाद द्विवेदी,पंत,प्रसाद,निराला, महादेवी,नागार्जुन,दिनकर, हरिवंशराय बच्चन से लेकर समकालीन लेखन के विशाल परिप्रेक्ष्य पर विहंगम दृष्टि डाली।उन्होंने हिंदी के विदेशी विद्वानों ग्रियर्सन,फादर कामिल बुल्के को भी याद किया।हिंदी दिवस के राजभाषायी परिप्रेक्ष्य की यथार्थ खोलते हुए उन्होंने कहा कि-'आजादी के समय 'शिक्षित' अभिजात्य वर्ग के लोग थे।जिनके खुद की उच्च शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी ही रहा।उस समय की बड़ी जरूरत भी थी अंग्रेजी की प्रचलित परंपरा के बरक्स हिंदी को खड़ी करने की। संविधान में इसके लिए 15 वर्ष का समय भी निर्धारित किया गया। 15 वर्षों बाद भी अंग्रेजी तो हटी नहीं और खुद राजभाषा भी अंग्रेजीदां हो गई। विडंबना यह भी हुई कि जो राजभाषा तैयार हुई वो न जनता की भाषा थी, न ही महाविद्यालयों या विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाने वाली भाषा। सात दशकों बाद भी आज संघ लोक सेवा और राज्य लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं सहित लगभग सभी महत्वपूर्ण परीक्षाओं में विवाद की स्थिति में प्रश्नपत्र का अंग्रेजी रूप ही क्यों मान्य है। हम आज तक राजभाषा हिंदी में कोई मौलिक प्रश्नपत्र क्यों नहीं तैयार कर सके। समानता के नाम पर अंग्रेजी के स्टील प्लांट को इस्पाती पौधा अनूदित करना कौन सा न्याय है , इंडिविजुअल की हिंदी व्यष्टिक करना और मॉडिफिकेशन को आपरिवर्तन कर कौन सा उद्देश्य पूरा किया जा रहा है वह भी संघ लोक सेवा जैसी प्रतिष्ठित परीक्षा में। क्या ये हिंदी माध्यम को हतोत्साहित करने का उपक्रम नहीं है ? एक आम आदमी से अपेक्षा की जाती है कि वो जीएसटी जाने , इंटरप्रेनुरेशिप बोले ,प्रोटोकॉल फॉलो करे पर वही अधिकारी लोक में बहुप्रचलित शब्दों नरवा,गरवा, घुरवा और बाड़ी को बोलना ,जानना नहीं सीख पाता या सीखने से कतराता हैराजभाषा हिंदी तभी जीवंत बनेगी ज!ब जनभाषा संजय शर्मा .के साथ निरन्तर संवाद करेगी।कार्यक्रम को डॉ(लोक),प्रोफ़ेसर रामकिशोर यादव,प्रोफ़ेसर दिनेश नाग,प्रोफ़ेसर आनन्द सोनी ने भी सम्बोधित किया।कार्यक्रम का संचालन लोकेश्वर कुमार ने एवं धन्यवाद ज्ञापन विभागाध्यक्ष डॉ कविता. वैष्णव ने किया।

रामधारी सिंह दिनकर जयंती- 23/09/2019

रामधारी सिंह दिनकर जयंती का आयोजन

गत दिनों महर्षि वेदव्यास शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय भभुआ में राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर को याद किया गया।सर्वप्रथम विभागाध्यक्ष डॉ . कविता वैष्णव ने दिनकर केव्यक्तित्व और कृतित्व पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि दिनकर भारतीय स्वाधीनता-आन्दोलन के भावबोध को इतिहास के माध्यम से नई रास्ता दिखाते हैं।रेणुका, हुंकार, परशुराम की प्रतीक्षा जैसी कविता संग्रह इसके परिचायक हैं।संस्कृति के चार अध्याय जैसी महत्वपूर्ण पुस्तक हर हिंदुस्तानी को पढ़नी चाहिए ताकि वह अपने देश के प्रति बेहतर समझ बना सके।दूसरे वक्ता डॉ भुवाल सिंह ठाकुर ने कहा कि दिनकर अग्निगर्भा कवि थे।उनकी कविताओं से गुजरना ऐसी उदात्त. यात्रा है जिसमें देशभक्ति,समाजबोध, गांधीवाद,मानसिक द्वंद,सांस्कृतिक और परम्परा के प्रति विवेकबोध,इतिहास की समय सम्पन्न व्याख्या,खड़ी बोली कि रवानगी और गुलाम भारत का स्वप्न और आजाद भारत का निर्मम यथार्थ झलकता है।दिनकर की कविताओं ने हिंदी का विस्तार किया इसलिए जब वे कविता पढ़ते थे तब दक्षिण भारतीय जनता भी पुनः हिंदी कविता को सुनने की मांग करते थे।दिनकर का जीवन राजनीति में रहते हुए भारतीय जनता की भावबोध और मिजाज को जिंदा रखने की कविता है।डॉ स्वप्न"-ठाकुर ने दिनकर की प्रसिद्ध रचना रश्मिरथी का भी पाठ किया . से ही सपने साकार होते हैं,स्वप्न से ही सपने साकार होते हैं"!

इस अवसर पर बड़ी संख्या में उत्साही विद्यार्थी मौजूद थे उन्होंने दिनकर से सम्बंधित अनेक रोचक प्रश्न भी पूछे।

भक्तिकाल के विविध आयाम- एकल व्याख्यान- डॉ. राजेश दुबे- प्रिंसिपल शासकीय महाविद्यालय खरोरा-04/12/2019

प्रश्न करने की बेचैनी की कविता है भक्तिकाल - डॉ. राजेश दुबे

गत दिनों महर्षि वेदव्यास शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय भखारा के हिंदी विभाग में 'भक्तिकाल के विविध आयाम' विषय पर 'विचार पर्व' का आयोजन किया गया।सर्वप्रथम सरस्वती पूजन के पश्चात बी प्रथम वर्ष के छात्र यशवन्त ने .ए. कबीर के पदों का सस्वरगायन किया।विषय प्रवर्त्तन करते हुए डॉ भुवाल सिंह ठाकुर . ने कहा कि आज के इस आयोजन का दो उद्देश्य है प्रथम छात्रोपयोगी विषय जैसे मीरा के स्त्री जागरण के रूप,तुलसी के लोकमंगल,सुर के जीवनोत्सव,कबीर के अनभय सत्य और अनुभव सत्य और जायसी के मानुष प्रेम का आज के समय में क्या भूमिका है।मुख्य वक्ता डॉ राजेश दुबे प्राचार्य शासकीय नवीन महाविद्यालय . भारतीय आंदोलन भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की मार्गदर्शक की भूमिका निभायी।भक्ति आंदोलन की शुरुआत की बात करते हुए उन्होंने रामचन्द्र शुक्ल,हजारी प्रसाद द्विवेदी,रामविलास शर्मा,मुक्तिबोध को याद किया।भक्तिकाल के सबसे प्रमुख आयाम के रूप में उन्होंने प्रतिरोध परम्परा को दर्ज किया।मीरा के भक्ति को उन्होंने स्त्री मुक्ति की भूमिका कहा। वे आगे कहते हैं कि भक्तिकाल की कविता लोकजीवन से सन्दर्भित होती है इसलिए वह कालजयी है। कबीर स्वानुभूत सत्य के कवि हैं।तुलसी के राम गांधी के रामराज्य में पुनर्नवा रूप में आता है।गांधी के पूरे आंदोलन परम्परा में मीरा की स्त्री भागीदारी के साथ तुलसी के लोकनायक राम मिले हुए हैं।सुर की कविता संसार भक्त और भगवान को अलग रूप न देकर मित्रभाव में मिलाने का संकल्प का नाम है।जायसी की कविता इस्लाम और हिंदुत्व को प्रेम के माध्यम से जोड़ने का संकल्प का नाम है ।प्रियंका रेड्डी के साथ हुई दुःखद घटना कवितावली की याद दिलाती है।भक्तिकाल की पूरी कविता सामंतीय मूल्यों के प्रतिरोध की कविता है।जिसके मूल में प्रश्नाकुलता है।संस्था प्रमुख प्राचार्या डॉ श्रीमती चंद्रकांता शर्मा.ने आशीर्वचन देते हुए कहा कि भक्तिकाल युद्ध के बरक्स शांति की कविता है।कट्टरता के बरक्स सहिष्णुता की कविता है जिसकी आज हमें सबसे ज्यादा जरूरत है।पश्चात माया,मुक्ता,कुमुदिनी ने मुख्य वक्ता से प्रश्न भी पूछे। कार्यक्रम का आभार प्रदर्शन हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. कविता वैष्णव ने किया।

कार्यक्रम में डॉसंजय शर्मा .,डॉडोंगरे.आर.एल., प्रोआनन्द सोनी.,डॉप्रदीप जांगड़े.,प्रोरामकिशोर यादव.,प्रोदिनेश नाग.,डॉअविनाश निचट., डॉ यशवन्त वैष्णव और उत्साही. विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

वसन्तोत्सव / निराला पुण्य स्मरण-व्याख्यान -डॉ .अम्बरीश त्रिपाठी /डॉ .अभिषेक पटेल -01/02/2020

युवाओं का बसन्त विषय पर कार्यशाला

गत दिनों महर्षि वेदव्यास शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय भखारा के हिंदी विभाग में एकदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया|सर्वप्रथम विद्यर्थियों द्वारा निराला की कविता 'सखी बसन्त आया','वर दे वीणावादिनी' का सस्वर पाठ किया गया।पश्चात विभागाध्यक्ष डॉ कविता वैष्णव ने कहा कि इस . कार्यशाला के दो प्रमुख उद्देश्य है बसन्त अर्थात् प्रकृति के विभिन्न उपादानों से विद्यार्थी जुड़े ताकि उनके अंदर देश के नदी,पहाड़,पर्वत,वृक्ष ,ऋतुएँ और लोकजीवन का संस्कार प्रबल हो।दूसरा उद्देश्य है हिंदी विषय में भविष्य की सम्भावनाओं से वे रूबरू हो।कार्यशाला के प्रथम सत्र को सम्बोधित करते हुए मुख्य वक्ता डॉ अम्बरीष त्रिपाठी सहायक प्राध्यापक . वसन्त' विषय का प्रवर्तन करते हुए कहा कि वसन्त शब्द में अगर व हटा दिया जाएं तो सन्त बचता है।बसन्त की प्रकृति सन्त की तरह है।राग विराग-,सुख दुख -,जय पराजय से परे।बसन्त हमें समदर्शी बने रहने की-सीख देता है।जब बसन्त के विशेषता पर सोचता हूं तो मुझे महात्मा गांधी याद आते हैं ।एक ऐसा व्यक्तित्व जो विश्व को सम बने रहकर सत्य,अहिंसा को पुनर्नवा बनाये रखने की सीख दी।युवाओं का बसन्त पर उन्होंने केदार नाथ अग्रवाल की कविता 'बसंती हवा 'अवतरित किया और कहा कि युवा भी बसंती हवा की भांति अलमस्त होकर जीवनराह पर अपने वजूद को सिद्ध करता है।डॉ अम्बरीष त्रिपाठी ने अपने विस्तृत व्याख्यान में सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के जीवन . अभ .प्रसंगों पर विस्तार से प्रकाश डाला।कार्यक्रम के दूसरे सत्र में शासकीय महाविद्यालय गुंडरदेही के असिस्टेंट प्रोफ़ेसर डॉ िषेक पटेल ने हिंदी में भविष्य की संभावनाएं विषय पर बोलते हुए जे एन यू.डी यू और देश विदेश के नामचीन विश्वविद्यालयों में पढ़ाये जा रहे विभिन्न हिंदी कोर्सेस पर विस्तार से प्रकाश डाला।उन्होंने हिंदी में भविष्य की बातें बताते हुए अपने मातृ संस्थान जे एन यू के परिवेश पर बात रखी और बताया कि उनके बैचमेट,नेट जे आर एफ,शोध क्षेत्र, अनुवादक,राजभाषा अधिकारी,पत्रकारिता,प्रोफेसर आई ए एस(उच्च शिक्षा),आई पी एस,फ़िल्म निर्माण,गीत और पटकथा लेखन ,ब्लाग लेखन जैसे विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी का मान बढ़ा रहे हैं।इसलिए अपने में गुणवत्ता का विकास कीजिये और हिंदी का परचम दिग दिगन्त तक फहराइये।प्राचार्य डॉ श्रीमती चन्द्रकान्ता . शर्मा ने दोनों अतिथियों को आलोचना और तद्भव पत्रिका भेंटकर सम्मान किया।कार्यक्रम की परिकल्पना,संयोजन और संचालन का दायित्व डॉ भुवाल सिंह . ठाकुर ने निभाया।कार्यक्रम में उत्साही विद्यार्थियों की उपस्थिति काबिलेतारीफ थी।

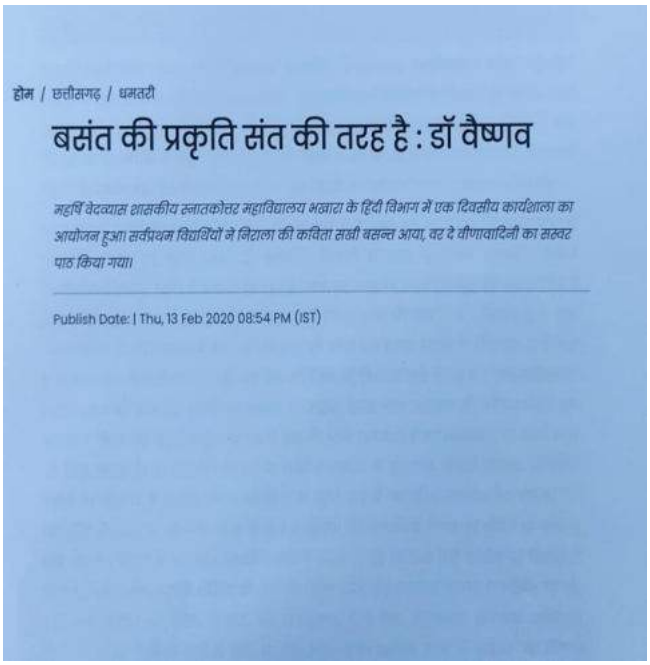
होम / छत्तीसगढ़ / धमतरी

बसंत की प्रकृति संत की तरह है : डॉ वैष्णव

महर्षि वेदव्यास शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय भखारा के हिंदी विभाग में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन हुआ। सर्वप्रथम विद्यार्थियों ने निराला की कविता सखी बसन्त आया, वर दे वीणावादिनी का सस्वर पाठ किया गया।

Publish Date: | Thu, 13 Feb 2020 08:54 PM (IST)

नईदुनिया

धमतरी (नईदुनिया न्यूज)। महर्षि वेदव्यास शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय भखारा के हिंदी विभाग में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन हुआ। सर्वप्रथम विद्यार्थियों ने निराला की कविता सखी बसन्त आया, वर दे वीणावादिनी का सस्वर पाठ किया गया। विभागाध्यक्ष डॉ. कविता वैष्णव ने कहा कि इस कार्यशाला के दो प्रमुख उद्देश्य है, जिसमें बसन्त अथति प्रकृति के विभिन्न उपादानों से विद्यार्थी जुड़े ताकि उनके अंदर देश के नदी, पहाड़, पर्वत, वृक्ष ,ऋतुएं और लोकजीवन का संस्कार प्रबल हो।

दूसरा उद्देश्य है हिंदी विषय में भविष्य की सम्भावनाओं से वे रुबरु हो। कार्यशाला के प्रथम सत्र को सम्बोधित करते हुए मुख्य वक्ता डॉ. अम्बरीश त्रिपाठी सहायक प्राध्यापक शासकीय नवीन महाविद्यालय मचांदुर (दुर्ग) ने युवाओं का वसन्त विषय का प्रवर्तन करते हुए कहा कि बसन्त शब्द में अगर व हटा दिया जाएं तो सन्त बचता है। बसन्त की प्रकृति सन्त की तरह है। राग-विराग, सुख- दुख, जय-पराजय से परे। बसन्त हमें समदर्शी बने रहने की सीख देता हैजब बसन्त के विशेषता पर सोचता हूं, तो मुझे महात्मा गांधी याद आते हैं। एक ऐसा व्यक्तित्व, जो विश्व को सम बने रहकर सत्य, अहिंसा को बनाये रखने की सीख दी। युवाओं का बसन्त पर उन्होंने केदार नाथ अग्रवाल की कविता बसंती हवा अवतरित किया और कहा कि युवा भी बसंती हवा की भांति अलमस्त होकर जीवनराह पर अपने वजूद को सिद्ध करता है। डॉ. अम्बरीष त्रिपाठी ने अपने व्याख्यान में सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के जीवन प्रसंगों पर विस्तार से प्रकाश डाला। कार्यक्रम के दूसरे सत्र में शासकीय महाविद्यालय गुंडरदेही के असिस्टेंट प्रो?ऽेसर डॉ. अभिषेक पटेल ने हिंदी में भविष्य की संभावनाएं विषय पर बोलते हुए जेएनयू, डीयू और देश विदेश के नामचीन विश्वविद्यालयों में पढ़ाये जा रहे विभिन्न हिंदी कोर्सेस पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने हिंदी में भविष्य की बातें बताते हुए अपने मातृ संस्थान जेएनयू के परिवेश पर बात रखी और बताया कि उनके बैचमेट, नेट जेआरएफ, शोध क्षेत्र, अनुवादक, राजभाषा अधिकारी, पत्रकारिता जैसे विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी का मान बढ़ा रहे हैं। इसलिए अपने में गुणवत्ता का विकास

STORIES और हिंदी का परचम लहराए। प्राचार्य डॉ. चन्द्रकान्ता शर्मा ने दोनों अतिथियों को आलोचना

जुड़े ताकि उनके अंदर देश के नदी, पहाड़, पर्वत, वृक्ष ,ऋतुएं और लोकजीवन का संस्कार प्रबल

दूसरा उद्देश्य है हिंदी विषय में भविष्य की सम्भावनाओं से वे रुबरु हो। कार्यशाला के प्रथम सत्र को सम्बोधित करते हुए मुख्य वक्ता डॉ. अम्बरीश त्रिपाठी सहायक प्राध्यापक शासकीय नवीन महाविद्यालय मचांदुर (दुर्ग) ने युवाओं का वसन्त विषय का प्रवर्तन करते हुए कहा कि बसन्त शब्द में अगर व हटा दिया जाएं तो सन्त बचता है। बसन्त की प्रकृति सन्त की तरह है। राग-विराग, सुख- दुख, जय-पराजय से परे। बसन्त हमें समदर्शी बने रहने की सीख देता हैजब बसन्त के विशेषता पर सोचता हूं, तो मुझे महात्मा गांधी याद आते हैं। एक ऐसा व्यक्तित्व, जो विश्व को सम बने रहकर सत्य, अहिंसा को बनाये रखने की सीख दी। युवाओं का बसन्त पर उन्होंने केदार नाथ अग्रवाल की कविता बसंती हवा अवतरित किया और कहा कि युवा भी बसंती हवा की भांति अलमस्त होकर जीवनराह पर अपने वजूद को सिद्ध करता है। डॉ. अम्बरीष त्रिपाठी ने अपने व्याख्यान में सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के जीवन प्रसंगों पर विस्तार से प्रकाश डाला। कार्यक्रम के दूसरे सत्र में शासकीय महाविद्यालय गुंडरदेही के असिस्टेंट प्रो?ऽेसर डॉ. अभिषेक पटेल ने हिंदी में भविष्य की संभावनाएं विषय पर बोलते हुए जेएनयू, डीयू और देश विदेश के नामचीन विश्वविद्यालयों में पढ़ाये जा रहे विभिन्न हिंदी कोर्सेस पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने हिंदी में भविष्य की बातें बताते हुए अपने मातृ संस्थान जेएनयू के परिवेश पर बात रखी और बताया कि उनके बैचमेट, नेट जेआरएफ, शोध क्षेत्र, अनुवादक, राजभाषा अधिकारी, पत्रकारिता जैसे विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी का मान बढ़ा रहे हैं। इसलिए अपने में गुणवत्ता का विकास कीजिये और हिंदी का परचम लहराए। प्राचार्य डॉ. चन्द्रकान्ता शर्मा ने दोनों अतिथियों को आलोचना और तद्भव पत्रिका भेंटकर सम्मान किया। कार्यक्रम की परिकल्पना, संयोजन और संचालन का दायित्व डॉ. भुवाल सिंह ठाकुर ने निभाया। इस अवसर पर विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

निराला जयन्ती / 18/02/2020 ,वसंतोत्सव का आयोजन

गत दिनों महर्षि वेदव्यास शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय भखारा के हिंदी विभाग द्वारा 'वसन्तोत्सव 2020 'के अन्तर्गत सरस्वती पूजन और निराला जयंती का आयोजन किया गया।सर्वप्रथम विभागाध्यक्ष डॉ कविता वैष्णव ने कहा कि बसन्त . नवता का प्रतीक है।मनुष्य को सदैव प्रसन्नचित्त होकर जीवन में नई दिशाओं को खोजना चाहिए।हर देशकाल में बसन्त सबसे उम्मीद रखती है कि बसन्त आता नहीं लाया जाता है।अतः जीवन में जिजीविषा के साथ आगे बढ़िए और प्रकृति से जुड़िये।उन्होंने आगे छायावाद के आधार स्तम्भ कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के जीवनयात्रा और रचनाकर्म पर विस्तार से बातें की।आगे प्राचार्य डॉ चन्द्रकान्ता. शर्मा ने विद्यार्थियों को आशीर्वचन देते हुए कहा कि बसन्त ऋतु आपके अंदर परीक्षा की तैयारी हेतु सजग करने वाली ऋतु है।सभी बातें पतझड़ के समान गिरा दो अब समय वास्तविक ज्ञान को परीक्षा में प्रदर्शित करने का है।अतः तुम सब आज माँ सरस्वती से आशीर्वाद लेकर अपनी बुद्धि,विवेक को जाग्रत कीजिये और अपने क्षेत्र का नाम रौशन कीजिये।आगे हिंदी के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ भुवाल सिंह ठाकुर ने बसन्त पंचमी के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए कहा कि बसन्त पंचमी के दिन ब्रम्हा ने सृष्टि. करना के क्रम में बुद्धि की अपरिहार्यता मानकर सरस्वती के जन्म की आदिरचना गढ़ी।इस दिन ही राम चिर प्रतीक्षा के बाद शबरी के आश्रम पधारें थे।बसन्तपंचमी के ही दिन पृथ्वीराज चौहान ने महमूद गोरी को शब्दभेदी बाण से मारा था और आज के दिन वीर हकीकत की बलिदान को याद करते हुए लाहौर में पतंग उत्सव का आयोजन किया जाता है।डॉ ठाकुर ने आगे निराला . विरचित कविता'वर दे वीणावादिनी' का सामयिक सन्दर्भो को उद्धाटित किया।उन्होंने सरस्वती की प्रतिमा के संदर्भ(वाग्देवी) में धारा नरेश भोज को याद किया और सरस्वती की चित्रछवि पर राजा रवि वर्मा के योगदान पर अपनी बातें रखी।

एकदिवसीय राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी/विषय-14-07-2020

प्रेमचंद और आज का भारत:किसान, युवा और स्त्रियों के संदर्भ में

वक्ता-

1-रामाज्ञा शशिधर

युवा आलोचक,कवि

एसोसिएट प्रोफ़ेसर, बनारस हिन्दूविश्वविद्यालय,वाराणसी

2-प्रवीण कुमार

युवा कथाकार

असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, सत्यवती कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

3-रश्मि रावत

युवा समीक्षक

असिस्टेंट प्रोफेसर, दिल्ली आटर्स एंड कामर्स कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

वेबिनर लिंक - https://youtu.be/eQ9AXGPTXZ8

महर्षि वेदव्यास शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय भखारा छत्तीसगढ़ राज्य के धमतरी जिले में स्थित है।हमारा महाविद्यालय सावन के बूंदों के बीच लमही,हीरा-मोती, हल्कू, होरी, धनिया, निर्मला, गोबर, झबरा के साथ 'प्रेमचंद पर्व'सम्पन्न करने जा रहा है।यह आयोजन दो कारणों से विशेष है- प्रथम गांधी जी अपने छत्तीसगढ़ आगमन के दौरान धमतरी आये थे।इस क्षेत्र में राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन को श्कंडेल नहर सत्याग्रहके रूप में यहां के किसानों ने रूप दिया था।अकारण नहीं गांधी जी ने धमतरी क्षेत्र को भारत का 'दूसरा'बारदोली' कहा था।

प्रेमचंद पर बात करते हुए हम गाँधी से भी मुख़ातिब होते हैं ।दूसरी महत्त्वपूर्ण बात है- कोरोना काल में प्रेमचंद का पाठ लॉकडाउन में बंद स्त्रियों के जीवन सन्दर्भों ,पलायन से लौटकर अपने गांव आएं मजदूरों और गांव के किसानों एवं देश के युवाओं के लिए किस तरह मार्गदर्शक सिद्ध हो सकती है।यह वैचारिक यात्रा प्रेमचंद के केंद्रीय व्यक्तित्व के बहाने लोक इतिहास, राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन,गाँधी से जुड़ने का सचेतन प्रयास है।

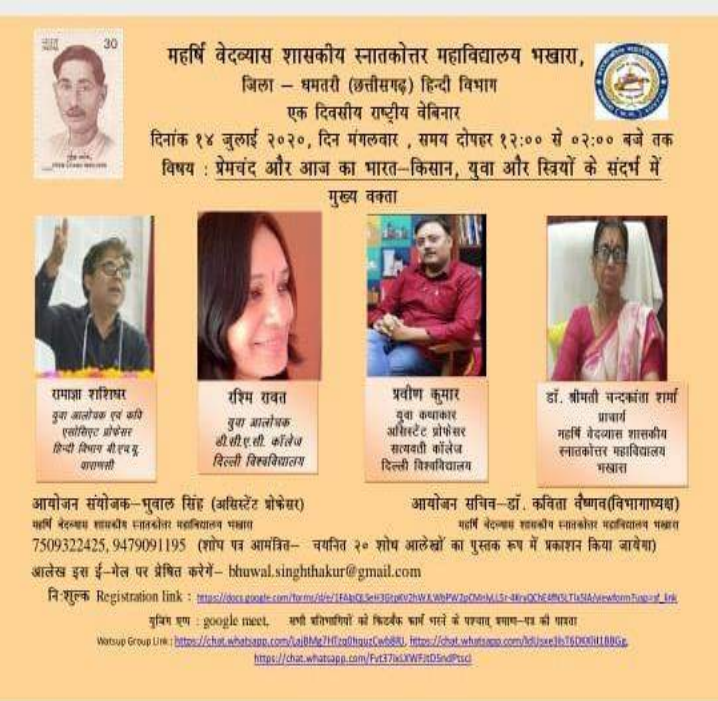

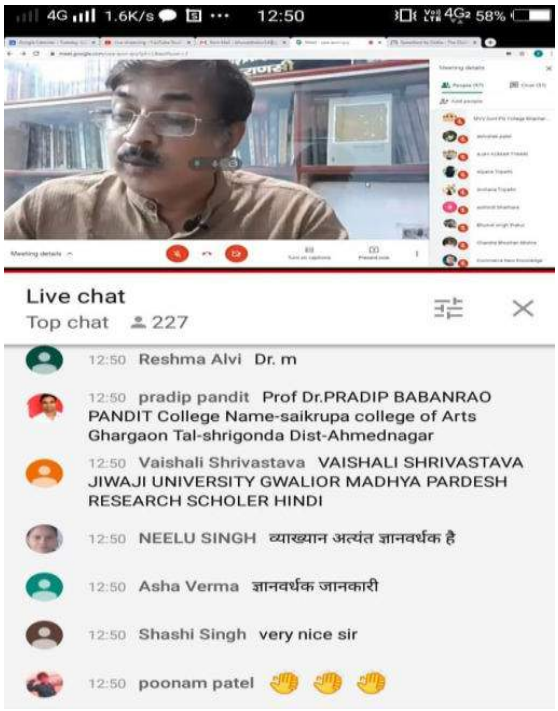

Live chat
Top chat 310

13:59 Ravindra Chaudhary feedback link provide karaye you tube par

13:59 kiran kiran please share feedback link

13:59 Madhu Tiwari मधु तिवारी, शिक्षक, कोंडागाँव, छत्तीसगढ़ ।बहुत सुंदर 👍🙏🙏

13:59 Aparna Mishra very informative session Dr Aparna Mishra Assistant Professor hindi Department. K.S.P.G college Ayodhya Uttar Pradesh aparnamishrarajsadan@gmail.com

13:59 sonia bhagat feedback link plzzzz

13:59 mala kumari naskar sabhi ko

13:59 REKHA KUMARI प्रणाम सर

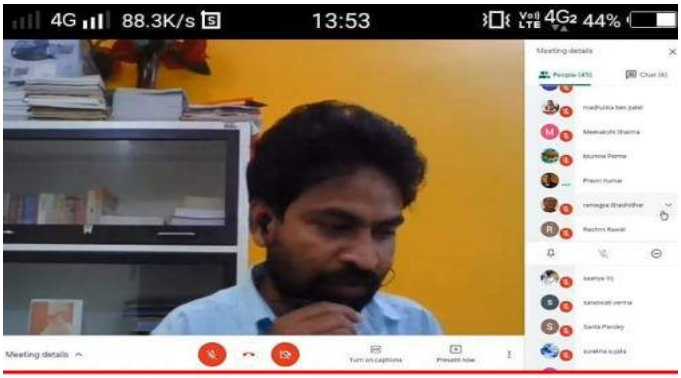

Live chat
Top chat 345

13:53 Jyoti Singh ज्ञानवर्धक व्याख्यान Dr Jyoti Singh Professor Hindi govt girls p.g. college Rewa

13:53 Kumari Manisha 👏👏👏

13:53 Samina Naikawdi feedback link share kare 1baje share karne ki bat ki thi group me

13:53 Dr. JANKI MATHPAL Dr.JANKI MATHPAL m.b.gov.p.g.colleGE HALDWANI KUMAUN UNIVERSITY NAINITAL UTTARAKHAND

13:53 revita kawale Thank you mam

13:53 kamini dr रश्मि जी का व्यख्यान बहुत ही जीवंत रहा । वास्तव में मैं समृद्ध हुई

13:53 Muneshwar Jamaiwar धन्यवाद मैम,

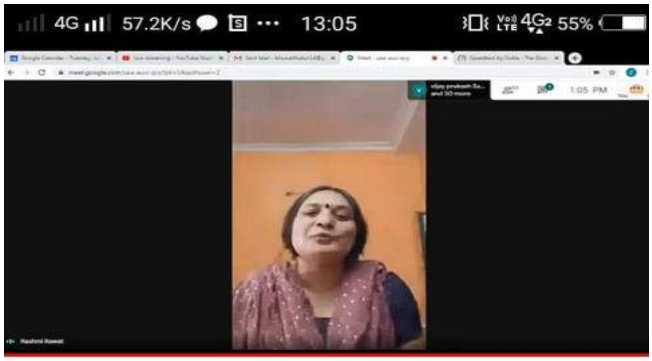

Live chat
Top chat 252

13:05 shobha srivastava बहुत उत्कृष्ट मेम अत्युत्तम वक्तव्य- डॉ शोभा रानी श्रीवास्तव एसोसिएट प्रोफेसर बद्री विशाल पी जी कालेज फर्रूखाबाद

13:05 Nirad Raja Nirad Raja

13:05 SARADA BAI सबको सादर प्रणाम

13:05 Poonam Srivadtava जी सही कहा ।।👏

13:05 Prabhat Ranjan अभिनंदन, छत्तीसगढ़ की ओर से सादर अभिनंदन।

13:05 Dhanehwari Dubey । प्रेमचंद साहित्य की बहुत सुंदर प्रस्तुति

13:05 Anurag Tiwari आपका सादर अभिनन्दन 💐🙏

Live chat replay
Top chat replay

2:11:35 Govardhan prasad suryavanshi महत्वपूर्ण जानकारी से युक्त एक सफल वेबिनार..., इस तरह के वेबिनार भविष्य में अन्य शीर्षक पर आयोजित किया जाना चाहिए

2:11:37 SARADA BAI आयोजकों को साधुवाद एवं शुभकामनाएं। सारदा बाई । डी ए वी पब्लिक स्कूल ब्रह्मपुर ओडिशा

2:11:43 revita kawale कविता मैम प्रणाम

2:11:47 Dr. Majid Ali राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी को सफल बनाने के लिए आप सबके धैर्य तथा सहयोग के लिए धन्यवाद, आभार

2:11:52 Anita Singh Kai baaten sapath hue

2:11:54 Dr. Majid Ali Feedback linkhttps://docs.google.com/forms/d/e/1FA...

2:11:57 Bhupendra kumar बहुत बहुत धन्यवाद, बहुत ही सफल आयोजन रहा 🙏🙏🙏

2:12:04 Dr. Atmaram Mahajan Thanks sir ji

2:12:05 Sreekala U very nice 👌 sessions

2:12:05 Dr.Manju Tamrakar nice webinar

2:12:10 arpana chauhan aapka bhi bahut bahut dhanyawad sir

मुक्तिबोध जयंती का आयोजन- 13/11/2021

गत दिनों हिंदी के सुप्रसिद्ध प्रगतिशील कवि गजानन माधव मुक्तिबोध की जयंती शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय भखारा में मनाई गई।पुण्यस्मरण शीर्षक से आयोजित इस कार्यक्रम के संयोजक डॉ. भुवाल सिंह ठाकुर ने कहा कि मुक्तिबोध करुणा के कवि थे।मुक्तिबोध की कविताएं आज़ाद भारत में आये कथनी और करनी के अंतर को वास्तविकता के धरातल पर उठाते हैं।तारसप्तक के प्रकाशन के बाद मुक्तिबोध की कविता जनमानस के सामने आती है।डॉ. ठाकुर ने मुक्तिबोध के संदर्भ में शमशेर बहादुर सिंह को याद किया जिन्होंने मुक्तिबोध की कविताई को आजाद भारत का इस्पाती दस्तावेज़ कहा है।मुक्तिबोध के कविताओं के देशकाल को बताते हुए डॉ. ठाकुर ने डॉ.रामविलास शर्मा के मुक्तिबोध के सम्बंध में आलोचना कर्म के चूक को भी रेखांकित किया।इस संदर्भ को अर्थविस्तार देते हुए उन्होंने नेमिचन्द्र जैन,प्रभाकर माचवे,अज्ञेय,नामवर सिंह,रमेश कुंतल मेघ,विनोद कुमार शुक्ल,नरेश सक्सेना ,विनय विश्वास के विचारों से विद्यार्थियों को रूबरू कराया।साथ ही उन्होंने विद्यार्थियों को मुझे कदम कदम पर कविता का पाठ भी सुनाया।कार्यक्रम में हिंदी की विभाग प्रमुख डॉ. कविता वैष्णव ने मुक्तिबोध के जीवन और रचनाकर्म पर विस्तार से अपनी बात रखी।डॉ. कविता वैष्णव ने मुक्तिबोध और छत्तीसगढ़ से उनके सम्बन्ध पर आत्मीय चर्चा की। कार्यक्रम में स्नातक के विद्यार्थियों की सराहनीय उपस्थिति रही।

भक्तिकाव्य और भक्ति-आन्दोलन पर संवाद–04–03–2022

गत दिनों महर्षि वेदव्यास शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय भखारा में हिंदी विभाग द्वारा भक्तिकाल पर संवाद का आयोजन किया गया।इस कार्यक्रम के दो उद्देश्य थे प्रथम भक्तिकालीन साहित्य से नई पीढ़ी को जोड़ना द्वितीय भक्तिकाव्य 2022 के समय में किस प्रकार हमें नई राह दिखा सकती है इस पर चर्चा।सर्वप्रथम विभाग प्रमुख डॉ. कविता वैष्णव ने भक्तिकाल के सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना पर प्रकाश डाला।उन्होंने भक्तिकालीन सामाजिक,राजनीतिक,सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की चर्चा की।उन्होंने कहा उत्तर भारत के भक्ति आन्दोलन के आकाशधर्मा गुरु रामानन्द ने जाति,धर्म, लिंग,वर्ण ,धर्म से परे जाकर मनुष्य मात्र की समानता का संदेश दिया।कबीर,सुर ,तुलसी,जायसी ,मीरा की कविता हताश हिन्दू प्रजा में नवीन आत्मविश्वास का संचार किया।कला, संगीत, स्थापत्य सभी क्षेत्रों में भक्तिकालीन समय किस प्रकार सर्वोच प्रतिमान रचता है।अकारण नहीं इस दौर को हिंदी साहित्य का स्वर्णयुग कहा जाता है।द्वितीय वक्ता डॉ. भुवाल सिंह ठाकुर ने भक्तिआन्दोलन और भक्तिकाव्य की आरंभिक प्रेरणा की बात सामने रखी।उन्होंने कहा भक्ति दुनिया में पहले भी थी लेकिन केवल पूजा-पाठ तक सीमित थी।पहली बार दक्षिण भारत में आचार्य रामानुजाचार्य ने विशिष्टाद्वैतवाद के माध्यम से संसार की सत्यता को स्वीकारा।जिससे भक्ति आंदोलन में परिवर्तित हुआ।रामानुजाचार्य ने निचली जाति के काँचीपूर्ण को गुरु बनाया और यह बताया कि मनुष्य की पहचान जाति नहीं बल्कि आचरण की पवित्रता से होती है।आंडाल पहली महिला भक्त थी जो दक्षिण भारत की रहने वाली थी।यही प्रेरणा दक्षिण भारत से रामानन्द के माध्यम से उत्तर भारत आई।डॉ. ठाकुर ने भक्तिआन्दोलन के अखिल भारतीय परिप्रेक्ष्य पर बात रखते हुए कश्मीर ललद्यद, महाराष्ट्र के तुकाराम, ज्ञानेश्वर, एकनाथ, बंगाल के चैतन्य महाप्रभु,असम के शंकरदेव,गुजरात के नरसी मेहता,पंजाब के गुरुनानक सरीखे सन्तभक्त कवियों के अवदान पर चर्चा की।कार्यक्रम के आखिरी कड़ी में विद्यार्थियों ने जिज्ञासा समाधान के लिए विभिन्न प्रश्न किये।कार्यक्रम में अतिथि शिक्षिका कु.तुलसा सहित स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं के विद्यार्थी उपस्थित रहें।

epaper.navabharat.news/vi

र्तन को ले पंच, या गया प्रशिक्षण

चित्रकला में यशश्री का उत्कृष्ट प्रदर्शन

कुरुद के रामसागर, डबरी तालाब में सफाई अभियान

भक्तिकाल को हिंदी साहित्य का स्वर्णयुग कहा

मुख्यमंत्री ट्रॉफी, टेनिस बॉल क्रिकेट 10 मार्च से

दैनिक भास्कर धमतरी 06-03-2022

भक्ति आंदोलन पर हुआ संवाद

भास्कर न्यूज | धमतरी

महर्षि वेदव्यास कॉलेज भखारा में हिंदी विभाग द्वारा भक्तिकाल पर संवाद का कार्यक्रम किया गया। इस कार्यक्रम के दो उद्देश्य भक्तिकालीन साहित्य से नई पीढ़ी को जोड़ना व भक्तिकाव्य 2022 के समय में किस प्रकार हमें नई राह दिखा सकती है इस पर चर्चा करना था। विभाग प्रमुख डॉ. कविता वैष्णव ने भक्तिकाल के सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना की जानकारी दी। उन्होंने भक्तिकालीन सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की चर्चा की। उन्होंने कहा उत्तर भारत के भक्ति आन्दोलन के आकाशधर्मा गुरु रामानन्द ने जाति, धर्म, लिंग, वर्ण ,धर्म से परे जाकर मनुष्य मात्र की समानता का संदेश दिया। कबीर, सूर, तुलसी, जायसी ,मीरा की कविताएं हताश हिन्दू प्रजा में नवीन आत्मविश्वास का संचार किया। कला, संगीत, स्थापत्य सभी क्षेत्रों में भक्तिकालीन समय में सर्वोच्च प्रतिमान रचा गया। अकारण नहीं इस दौर को हिंदी साहित्य का स्वर्णयुग कहा जाता है।

धमतरी। भक्तिकाल पर संवाद कार्यक्रम में शामिल विद्यार्थी।

डॉ. भुवाल सिंह ठाकुर ने भक्ति आन्दोलन और भक्तिकाव्य की आरंभिक प्रेरणा की बात रखी। उन्होंने कहा भक्ति दुनिया में पहले भी थी लेकिन केवल पूजा-पाठ तक सीमित थी। पहली बार दक्षिण भारत में आचार्य रामानुजाचार्य ने विशिष्टाद्वैतवाद के माध्यम से संसार की सत्यता को स्वीकारा। यह 'भक्ति' आंदोलन में परिवर्तित हुआ। रामानुजाचार्य ने निचली जाति के कांचीपूर्ण को गुरु बनाया और यह बताया कि मनुष्य की पहचान जाति नहीं बल्कि आचरण की पवित्रता से होती है। आंडाल पहली महिला भक्त थी जो दक्षिण भारत की रहने वाली थीं। यही प्रेरणा दक्षिण भारत से रामानन्द के माध्यम से उत्तर भारत आई। डॉ. ठाकुर ने भक्ति आन्दोलन के अखिल भारतीय परिप्रेक्ष्य पर बात रखते हुए कश्मीर लदाख, महाराष्ट्र के तुकाराम, ज्ञानेश्वर, एकनाथ, बंगाल के चैतन्य महाप्रभु, असम के शंकरदेव, गुजरात के नरसी मेहता, पंजाब के गुरुनानक सरीखे सन्त, भक्त कवियों की चर्चा की। कार्यक्रम में विद्यार्थियों की जिज्ञासा का समाधान किया। कार्यक्रम में अतिथि शिक्षक तुलसा सहित स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं के विद्यार्थी उपस्थित रहे।

फणीश्वरनाथ नाथ रेणु जन्म–शताब्दी का आयोजन–05–03–2022

गत दिनों महर्षि वेदव्यास शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय भखारा में आँचलिक उपन्यासकार फणीश्वरनाथ रेणु के जन्मशताब्दी समारोह का आयोजन किया गया।इस आयोजन में एम.ए हिंदी के द्वितीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर के विद्यार्थियों ने शिरकत की।कार्यक्रम के प्रारम्भ में डॉ. भुवाल सिंह ठाकुर ने हिंदी उपन्यास परम्परा में रेणु के अवदान पर विस्तार से चर्चा की।उन्होंने कहा रेणु आँचलिक कथाकार होते हुए गुलाम भारत के स्वप्न और आजाद भारत के यथार्थ को सामने रखने वाले रचनाकार थे।मैला आँचलएक ऐसा मानीखेज़ उपन्यास है जिसमें बिहार पूर्णिया क्षेत्र का मेरीगंज गांव सिर्फ क्षेत्र विशेष तक सीमित नहीं है बल्कि यह पूरे भारत के गांवों का प्रतिनिधित्व करता है।डॉ. ठाकुर ने रेणु के संदर्भ को नेमिचन्द्र जैन के कथन से जोड़ते हुए कहा कि मैला आँचल जीवन के सौरभ से सम्पन्न कालजयी रचना है।यह रचना आज भी हमें अपने देश के फूल शूल धूल कीचड़ सबको संवेदनशील नजरों से अवलोकन कर मनुष्यता को सर्वोपरि मानने का संदेश देती है।रेणु एक ऐसे कथाकार हैं जो आन्दोलनजीवी थे।सामान्य के वैभव से सम्पन्न उनका साहित्य तीसरी कसम, रसप्रिया, ठेस परती परिकथा जूलूस, दीर्घतपा ठुमरी एक आदिम रात्रि की महक अग्निखोर ऋणजल-धनजल नेपाली क्रांतिकथा वनतुलसी की गंध लाल पान की बेगम पंचलाइट औसत भारतीय के सुख-दुःख हास-परिहास का लोकसंस्करण है।कार्यक्रम की अगली कड़ी में विभाग प्रमुख डॉ. कविता वैष्णव ने रेणु के सुप्रसिद्ध कहानी संवदिया का रोचक पाठ प्रस्तुत किया।पाठ के दौरान हरगोबिन के मानवीय चरित्र और ग्रामीण जिंदगी के सच को उन्होंने अनेक प्रसंगों के माध्यम से उठाया।साथ ही विद्यार्थियों से रेणु जन्म–शताब्दी के अवसर पर हिंदी पत्रिकाओं लमही संवेद बनास जन के विशेषांक पर भी सूचनापरक चर्चा हुई।

फणीश्वरनाथ रेणु का जन्म शताब्दी समारोह मना

भखारा । गत दिनों महर्षि वेदव्यास शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय भखारा में आंचलिक उपन्यासकार फणीश्वरनाथ रेणु का जन्म शताब्दी समारोह मनाया गया। इस आयोजन में एमए हिंदी के द्वितीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर के विद्यार्थियों ने भाग लिया। डॉ. भुवाल सिंह ठाकुर ने हिंदी उपन्यास परम्परा में रेणु के अवदान पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि रेणु आंचलिक कथाकार होते हुए गुलाम भारत के स्वप्न और आजाद भारत के यथार्थ को सामने रखने वाले रचनाकार थे। मैला आंचल ऐसा उपन्यास है जिसमें बिहार पूर्णिया क्षेत्र का मेरीगंज गांव सिर्फ क्षेत्र विशेष तक सीमित नहीं है बल्कि यह पूरे भारत के गांवों का प्रतिनिधित्व करता है। डॉ. ठाकुर ने रेणु के संदर्भ को नेमीचन्द्र जैन के कथन से जोड़ते हुए कहा कि मैला आंचल जीवन के सौरभ से सम्पन्न कालजयी रचना है। यह रचना आज भी हमें अपने देश के फूल, शूल, धूल, कीचड़ सबको संवेदनशील नजरों से अवलोकन कर मनुष्यता को सर्वोपरि मानने का संदेश देती है। रेणु एक ऐसे कथाकार हैं जो आन्दोलनजीवी थे। विभाग प्रमुख डॉ. कविता वैष्णव ने रेणु की सुप्रसिद्ध कहानी संवदिया का रोचक पाठ प्रस्तुत किया। विद्यार्थियों से हिंदी पत्रिकाओं लमही, संवेद, बनास जन के विशेषांक पर भी चर्चा हुई।

चंदैनी गोंदा और लोकजागरण विषय पर एकल व्याख्यान – 04.04.2022

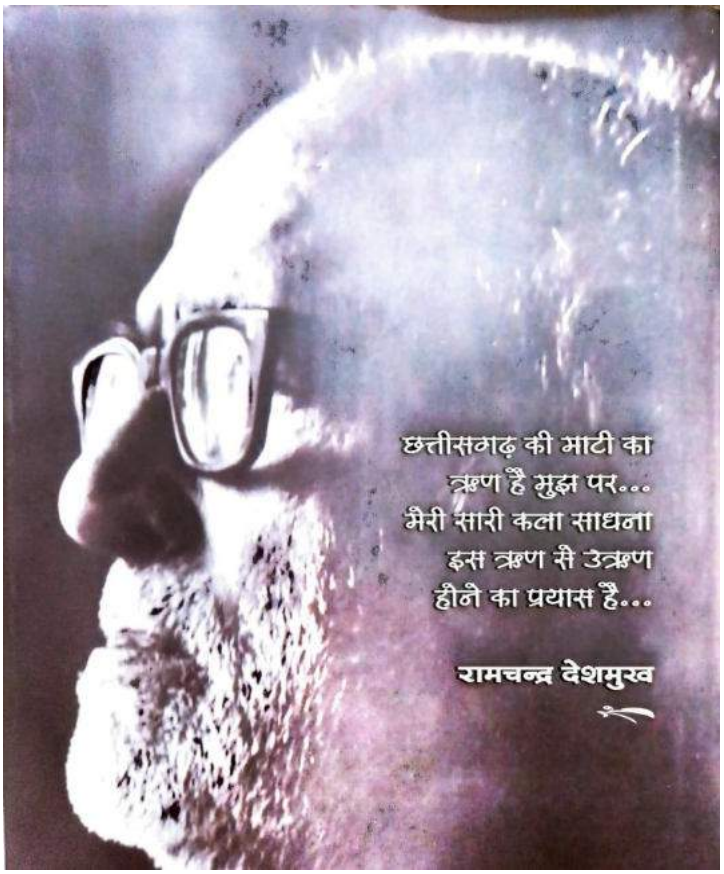

गत दिनों महर्षि वेदव्यास शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय भखारा के हिंदी विभाग के सानिध्य में छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विरासत चंदैनी गोंदा में निहित लोकजागरण के विभिन्न पक्षों पर एकल व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ राज्य गीत 'अरपा पैरी के धार' के गायन के साथ हुआ। गायन कु.मिथिला का था। विषय प्रवर्त्तन करते हुए कार्यक्रम संयोजक डॉ. भुवाल सिंह ठाकुर ने कहा-चंदैनी गोंदा पर चर्चा दो दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। प्रथम छत्तीसगढ़ की देशज आधुनिकता के विभिन्न पहलुओं पर विमर्श और दूसरा अपनी लोक परम्परा के आँचलिक ताप में समाहित इतिहास बोध,देशराग, छत्तीसगढिया जीवन सौरभ और अपनी जातीय स्मृतियों के माध्यम से स्वत्व की पहचान। डॉ. सुरेश देशमुख सर के उद्घोष भरी वाणी से गुजरना अपने लोक के सुरुज और चंदा को निहारना है।चंदैनी गोंदा **छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक यात्रा-दाऊ रामचन्द्र देशमुख (व्यक्तित्व और कृतित्व)** पुस्तक के नीरक्षीर सम्पादन में देशमुख सर ने छत्तीसगढ़ लोक की श्मोर संग चलवश की भाववाणी को पुनर्नवा किया है। जिसके केंद्र में पुरखा दाऊ रामचन्द्र देशमुख जी हैं। डॉ. ठाकुर ने दाऊ रामचन्द्र देशमुख की तुलना आधुनिक हिंदी के प्रवर्तक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से किया।

मुख्य वक्ता डॉ. सुरेश देशमुख, सेवानिवृत्त प्रोफेसर शासकीय बी.सी.एस. महाविद्यालय धमतरी जो स्वयं चंदैनी गोंदा के संचालककर्ता भी थे उन्होंने अपने वक्तव्य में गांधी के सम्बंध में अल्बर्ट आइंस्टाइन के कथन को चंदैनी गोंदा के सम्बंध में याद किया और कहा कि हमारी पीढ़ी शायद ही यह यकीन करेगा कि यहां चंदैनी गोंदा जैसा सांस्कृतिक जागरण का कोई शंखनाद हुआ था।ऐसा आयोजन जिसमें छत्तीसगढ़वासी लाखों की संख्या में एकचित्त होकर कार्यक्रम देखते थे।यह विशाल संख्या हिंदुस्तान के इतिहास में अभूतपूर्व है। चंदैनी गोंदा छत्तीसगढ़ की सामूहिकता, हाशिये के कलाकार को स्वर देने, किसान के आशा-आकांक्षा और दर्द को आवाज़ देने वाली लोकगीतों की आराधना थी। चंदैनी गोंदा का मुख्य अतिथि कभी राजनीतिक व्यक्ति नहीं रहा इसमें सदा स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और साहित्यकार को केंद्र में रखा गया। चंदैनी गोंदा विशिष्ट को हाशिये में ठेलकर सामान्य जन को केन्द्रीयता दी।सामाजिक परिवर्तन के रूप में चंदैनी गोंदा ने ऊंच-नीच की भावना को तोड़ा।इसमें सभी जाति के कलाकार एक साथ भोजन करते थे और देवारीन स्त्रियों के अतिरिक्त अन्य वर्ग के स्त्रियां भी इसमें हिस्सेदारी करने लगी।छत्तीसगढिया को आर्थिक शोषण के कारकों की पहचान चंदैनी गोंदा ने कराया।आजादी की खुशी की मिठाई के स्थान पर खाली कटोरा मिलने पर भी इसने धैर्य के साथ चिंतन और क्रांति का पाठ पढ़ाया। राजनीतिक जागरण के स्तर पर इसने जनता को उनकी बेपनाह ताकत से रूबरू कराया। सांस्कृतिक जागरण के स्तर पर चंदैनी गोंदा ने छत्तीसगढ़ी के प्रति उपेक्षापूर्ण दृष्टि को स्वाभिमान में बदला। चंदैनी गोंदा के पहले तक छत्तीसगढ़ी को विदूषकों की भाषा या लेबल क्लास लैंग्वेज मानकर चलने की अवधारणा को इस सांस्कृतिक आयोजन ने तोड़ा।द्वारिका प्रसाद विप्र, लक्ष्मण मस्तुरिया, रविशंकर शुक्ल, पवन दीवान, भगवती सेन, विनय पाठक, मुकुंद कौशल जैसे गीतकारों और अनेक नाम -अनाम कलाकारों को एक माला में पिरोने का नाम चंदैनी गोंदा है। यह छत्तीसगढ़ की कहानी के माध्यम से समूचे भारत में जहां कहीं भी किसान और आम जन शोषण, अत्याचार का शिकार है उसका सांस्कृतिक प्रतिरोध है।

कार्यक्रम के अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य डॉ. गुप्तेश्वर गुप्ता ने कहा कि चंदैनी गोंदा की विरासत से युवाओं को जोड़ना हम सबका दायित्व है। अपनी इतिहास, परम्परा और लोकसंस्कृति का ज्ञान ही सच्चा आत्मज्ञान है। हिंदी विभाग प्रमुख डॉ. कविता वैष्णव ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए चंदैनी गोंदा से सम्बंधित संस्मरण सुनाएं और सभी अतिथि जनों का आभार प्रदर्शन की। कार्यक्रम में सभी संकाय के विद्यार्थियों के साथ डॉ. संजय शर्मा, प्रो.लक्ष्मी नारायण सिन्हा, प्रो.दिनेश नाग, रामकिशोर यादव, प्रो.प्रदीप जांगड़े, ग्रन्थपाल लोकेंद्र सुधाकर, प्रो.जानेन्द्र बंजारे, प्रो.हरविंदर सिंह कुर्रे उपस्थित थे!

एकल व्याख्यान - ०४.०४.२०२२
चंदैनी गोंदा और लोक जागरण
वक्तव्य - डॉ. सुरेश देशमुख

एकल व्याख्यान - ०४.०४.२०२२
चंदैनी गोंदा और लोक जागरण
वक्तव्य - डॉ. सुरेश देशमुख

लाई मुर्रा जिन्दाबाद
।। जय जोहार ।।
एकल व्याख्यान - ०४.०४.२०२२
चंदैनी गोंदा और लोक जागरण
वक्तव्य - डॉ. सुरेश देशमुख

दैनिक भास्कर धमतरी 07-04-2022

चंदैनी गोंदा ने ऊंच-नीच के भाव को तोड़ा: डॉ. देशमुख

व्याख्यान माला: महर्षि वेदव्यास कॉलेज में चंदैनी गोंदा और लोकजागरण विषय पर हुआ संवाद

भास्कर न्यूज | बगदेही

महर्षि वेदव्यास कॉलेज भखारा के हिन्दी विभाग ने छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विरासत चंदैनी गोंदा में निहित लोकजागरण के विभिन्न पक्षों पर व्याख्यान कराया। कार्यक्रम संयोजक डॉ. भुवाल सिंह ठाकुर ने कहा-चंदैनी गोंदा पर चर्चा दो दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। प्रथम छत्तीसगढ़ की देशज आधुनिकता के विभिन्न पहलुओं पर विमर्श और दूसरा अपनी लोक परम्परा के आंचलिक ताप में समाहित इतिहास बोध, देशराग, छत्तीसगढ़िया जीवन सौरभ और अपनी जातीय स्मृतियों के माध्यम से स्वत्व की पहचान है। डॉ. सुरेश देशमुख के उद्घोष भरी वाणी से गुजरना अपने लोक के सूरज और चंदा को निहारना है। चंदैनी गोंदा छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक यात्रा-दाऊ रामचन्द्र देशमुख की व्यक्तित्व और कृतित्व पुस्तक के सम्पादन में देशमुख ने

बगदेही। व्याख्यान माला कार्यक्रम में उपस्थित शिक्षक।

छत्तीसगढ़ लोक की 'मोर संग चलव' की भाववाणी को पुनरनवा किया है। डॉ. ठाकुर ने दाऊ रामचन्द्र देशमुख की तुलना आधुनिक हिन्दी के प्रवर्तक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से की है। मुख्य वक्ता डॉ. सुरेश देशमुख सेवानिवृत्त प्रोफेसर शासकीय बीसीएस महाविद्यालय धमतरी जो स्वयं चंदैनी गोंदा के संचालनकर्ता भी थे, उन्होंने कहा कि हमारी पीढ़ी को शायद ही यह यकीन होगा कि यहां चंदैनी गोंदा जैसा सांस्कृतिक जागरण का कोई शंखनाद हुआ था। ऐसा आयोजन जिसमें छत्तीसगढ़वासी लाखों की संख्या में एकचित्त होकर कार्यक्रम देखते थे। यह विशाल संख्या हिंदुस्तान के इतिहास में अभूतपूर्व है। चंदैनी गोंदी का मुख्य अतिथि कभी राजनीतिक नहीं रहा चंदैनी गोंदा का मुख्य अतिथि कभी राजनीतिक व्यक्ति नहीं रहा इसमें सदा स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और साहित्यकार को केंद्र में रखा गया। चंदैनी गोंदा विशिष्ट को हाशिये में ढेलकर सामान्य जन को केन्द्रीयता दी। सामाजिक परिवर्तन के रूप में चंदैनी गोंदा ने ऊंच-नीच की भावना को तोड़ा। इसमें सभी जाति के कलाकार एक साथ भोजन करते थे और देवारीन स्त्रियों के अतिरिक्त अन्य वर्ग के स्त्रियां भी इसमें हिस्सेदारी करने लगीं।छत्तीसगढ़िया को आर्थिक शोषण के कारकों की पहचान चंदैनी गोंदा ने कराई। सांस्कृतिक जागरण के स्तर पर चंदैनी गोंदा ने छत्तीसगढ़ी के प्रति उपेक्षापूर्ण दृष्टि को स्वाभिमान में बदला। द्वारिका प्रसाद विप्र, लक्ष्मण मस्तुरिया, रविशंकर शुक्ल, पवन दीवान, भगवती सेन, विनय पाठक, मुकुंद कौशल जैसे गीतकारों और अनेककलाकारों को एक माला में पिरोने का नाम चंदैनी गोंदा है। यह छत्तीसगढ़ की कहानी के माध्यम से समूचे भारत में जहां कहीं भी किसान और आम जन शोषण ,अत्याचार का प्रतिरोध है।

कॉलेज में लोक जागरण पर एकल व्याख्यान

भखारा. गत दिनों महर्षि वेदव्यास शासकीय कॉलेज भखारा के हिंदी विभाग के सानिध्य में छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विरासत चंदैनी गोंदा में निहित लोक जागरण के विभिन्न पक्षों पर एकल व्याख्यान का आयोजन किया गया. कार्यक्रम संयोजक डॉ. भुवाल सिंह ठाकुर ने कहा कि चंदैनी गोंदा पर चर्चा दो दृष्टियों से महत्वपूर्ण है.प्रथम छत्तीसगढ़ की देशज आधुनिकता के विभिन्न पहलुओं पर विमर्श और दूसरा अपनी लोक परम्परा के आँचलिक ताप में समाहित इतिहास बोध, देशराग, छत्तीसगढ़िया जीवन सौरभ और अपनी जातीय स्मृतियों के माध्यम

से स्वत्व की पहचान. डॉ. सुरेश देशमुख सर के उद्घोष भरी वाणी से गुजरना अपने लोक के सुरुज और चंदा को निहारना है.चंदैनी गोंदा छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक यात्रा दाऊ रामचन्द्र देशमुख व्यक्तित्व और कृतित्व पुस्तक के नीरक्षीर सम्पादन में श्री देशमुख ने छत्तीसगढ़ लोक की 'मोर संग चलव' की भाववाणी को पुनर्नवा किया है.जिसके केंद्र में पुरखा दाऊ रामचन्द्र देशमुख जी हैं.डॉ. ठाकुर ने दाऊ रामचन्द्र देशमुख की तुलना आधुनिक हिंदी के प्रवर्तक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से किया.मुख्य वक्ता डॉ. सुरेश देशमुख, जो स्वयं चंदैनी गोंदा के संचालककर्ता भी थे उन्होंने अपने वक्तव्य में गांधी के सम्बंध में अल्बर्ट आइंस्टाइन के कथन को चंदैनी गोंदा के सम्बंध में याद किया और कहा कि हमारी पीढ़ी शायद ही यह यकीन करेगा कि यहां चंदैनी गोंदा जैसा सांस्कृतिक जागरण का कोई शंखनाद हुआ था. कार्यक्रम के अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य डॉ. गुप्तेश्वर गुप्ता ने कहा कि चंदैनी गोंदा की विरासत से युवाओं को जोड़ना हम सबका दायित्त्व है.अपनी इतिहास, परम्परा और लोकसंस्कृति का ज्ञान ही सच्चा आत्मज्ञान है.हिंदी विभाग प्रमुख डॉ. कविता वैष्णव ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए चंदैनी गोंदा से सम्बंधित संस्मरण सुनाएं और सभी अतिथि जनों का आभार प्रदर्शन की.कार्यक्रम में सभी संकाय के विद्यार्थियों के साथ डॉ. संजय शर्मा, प्रो.लक्ष्मी नारायण सिन्हा, प्रो.दिनेश नाग, रामकिशोर यादव, प्रो.प्रदीप जांगड़े, ग्रन्थपाल लोकेंद्र सुधाकर, प्रो.जानेन्द्र बंजारे, प्रो.हरविंदर सिंह कुर्रे उपस्थित थे.

6:40 AM

epaper.naidunia.com/mepaper/07-apr-2022-44-dhamtari-edition-dhamtari-page-15.

न्यूज गैलरी

निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण और अपीलीय अधिकारी नियुक्त

धमतरी। त्रि स्तरीय पंचायती के उप निर्वाचन 2022 के तहत जिले के धमतरी तहसील के ग्राम पंचायत सिवनीखुर्द, भानपुरी, देवानझाबाद में उप निर्वाचन कराया जाना है। इसी तरह कुरुद के ग्राम पंचायत ओरगाईन, चोरभट्ठी, जीजामगांव, सिर्री, भखारा तहसील के ग्राम पंचायत सिलघट, सरवदा, मगरलोड तहसील के पंचायत परसापुडा, मेंहा और नगरी तहसील के ग्राम पंचायत कोलियारी, बोराई, तटियारा और बिलभदर में उप निर्वाचन कराया जाना है। इसके लिए निर्वाचक नामावली तैयार करने कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी। स्थानीय निर्वाचन। पीएस एल्मा ने अपर कलेक्टर को अपीलीय अधिकारी नियुक्त की है।

'चंदैनी गोंदा ने छत्तीसगढ़ी के प्रति उपेक्षापूर्ण दृष्टि को स्वाभिमान में बदला'

धमतरी (नि)। महर्षि वेदव्यास शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय भखारा के हिंदी विभाग के सानिध्य में छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विरासत चंदैनी गोंदा में निहित लोक जागरण के विभिन्न पक्षों पर एकल व्याख्यान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर कार्यक्रम संयोजक डा. भुवाल सिंह ठाकुर ने कहा कि चंदैनी गोंदा पर चर्चा दो दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। प्रथम छत्तीसगढ़ की देशज आधुनिकता के विभिन्न पहलुओं पर विमर्श और दूसरा अपनी लोक परंपरा के आंचलिक ताप में समाहित इतिहास बोध, देशराग, छत्तीसगढ़िया जीवन सौरभ और अपनी जातीय स्मृतियों के माध्यम से स्वत्व की पहचान। उन्होंने कहा कि दाऊ रामचंद्र देशमुख की तुलना आधुनिक हिंदी के प्रवर्तक भारतेंदु हरिश्चंद्र से की जा सकती है। मुख्य वक्ता डा सुरेश देशमुख ने गांधी के संबंध में अल्बर्ट आइंस्टाइन के कथन को चंदैनी गोंदा के संबंध में याद किया। कहा कि हमारी पीढ़ी शायद ही यह यकीन करेगी कि यहां चंदैनी गोंदा जैसा सांस्कृतिक जागरण का कोई शंखनाद हुआ था। ऐसा आयोजन जिसमें छत्तीसगढ़वासी लाखों की संख्या में एकचित्त होकर कार्यक्रम देखते थे। यह विशाल संख्या हिंदुस्तान के इतिहास में अभूतपूर्व है। चंदैनी गोंदा

भखारा कालेज के हिंदी विभाग में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित कालेज के छात्र। • नी भखारा कालेज

छत्तीसगढ़ की सामूहिकता, हाशिए के कलाकार को स्वर देने, किसान के आशा-आकांक्षा और दर्द को आवाज देने वाली लोकगीतों की आराधना थी। चंदैनी गोंदा ने छत्तीसगढ़ी के प्रति उपेक्षापूर्ण दृष्टि को स्वाभिमान में बदला। द्वारिका प्रसाद विप्र, लक्ष्मण मस्तुरिया, रविशंकर शुक्ल, पवन दीवान, भगवती सेन, विनय पाठक, मुकुंद कौशल जैसे गीतकारों और अनेक नाम-अनाम कलाकारों को एक माला में पिरोने का नाम चंदैनी गोंदा है।

यह छत्तीसगढ़ की कहानी के माध्यम से समूचे भारत में जहां कहीं भी किसान और आम जन शोषण, अत्याचार का शिकार है उसका सांस्कृतिक प्रतिरोध है। प्राचार्य गुप्तेश्वर गुप्ता ने कहा कि चंदैनी गोंदा की विरासत से युवाओं को जोड़ना हम सबका दायित्व है। कार्यक्रम में हिंदी विभाग प्रमुख डा. कविता वैष्णव, डा संजय शर्मा, लक्ष्मी नारायण सिन्हा, दिनेश नाग, रामकिशोर यादव, प्रदीप जांगड़े, ग्रंथपाल लोकेंद्र सुधाकर, जानेंद्र बंजारे, हरविंदर सिंह कुर्रे उपस्थित थे।